“ब्रह्ममोक्कटे” ग्रंथमाला

नायनार

(तिरसठ शिवभक्तों की जीवनियाँ)

हिन्दी अनुवाद

डॉ. एम. रंगय्या

तेलुगु मूल

आचार्य श्रीपाद जयप्रकाश

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2018

NAYANAR

Hindi Translation
Dr. M. Rangaiah

Telugu Original
Acharya Sripada Jayaprakash

T.T.D. Religious Publications Series No.1283

First Edition - 2018

Copies : 1000

Published by
Sri Anil Kumar Singhal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Publications Division
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati

प्राक्कथन

भारत के विविध प्रान्तों में, विभिन्न समयों में सभी कुल व जातियों में अनेक महान विभूतियाँ अवतरित हुईं। ऐसी महात्माओं ने अपनी समकालीन विविध परिस्थितियों से जूझते हुए सामाजिक प्रगति के लिए अथक परिश्रम किया था। इसके लिए उन्होंने जनता में सामाजिक चेतना के साथ - साथ आध्यात्मिक चेतना भी विकसित करने के लिए अपना तन-मन-धन लगाया था।

ऐसी महात्माओं की जीवनियों को, उनके द्वारा व्यक्त की गई जीवन की यथार्थताओं व आध्यात्मिक संदेशों को भक्तों तक, विशेषकर, भावी नागरिकों (बच्चों) तक पहुँचाने के लिए तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् ने 'ब्रह्ममोक्कटे' नामक शीर्षक के अन्तर्गत एक पुस्तक श्रृंखला को प्रारंभ किया है। तदनुरुप कुछ विद्वानों से ऐसी महान विभूतियों के जीवन चरितों का चित्रण करनेवाले ग्रंथ लिखवाकर प्रकाशित करने का संकल्प किया है।

इस क्रम में डॉ. एम. रंगय्या द्वारा अनूदित नायनार (तिरसठ शिवभक्तों की जीवनियाँ) नामक पुस्तक आप तक हम पहुँचा रहे हैं। यह हमारी आकांक्षा है कि इस ग्रंथ के अध्ययन द्वारा बड़े और छोटे दोनों आध्यात्मिक चेतना से लाभान्वित हो जाएँगे।

सदा श्रीहरि की सेवा में,
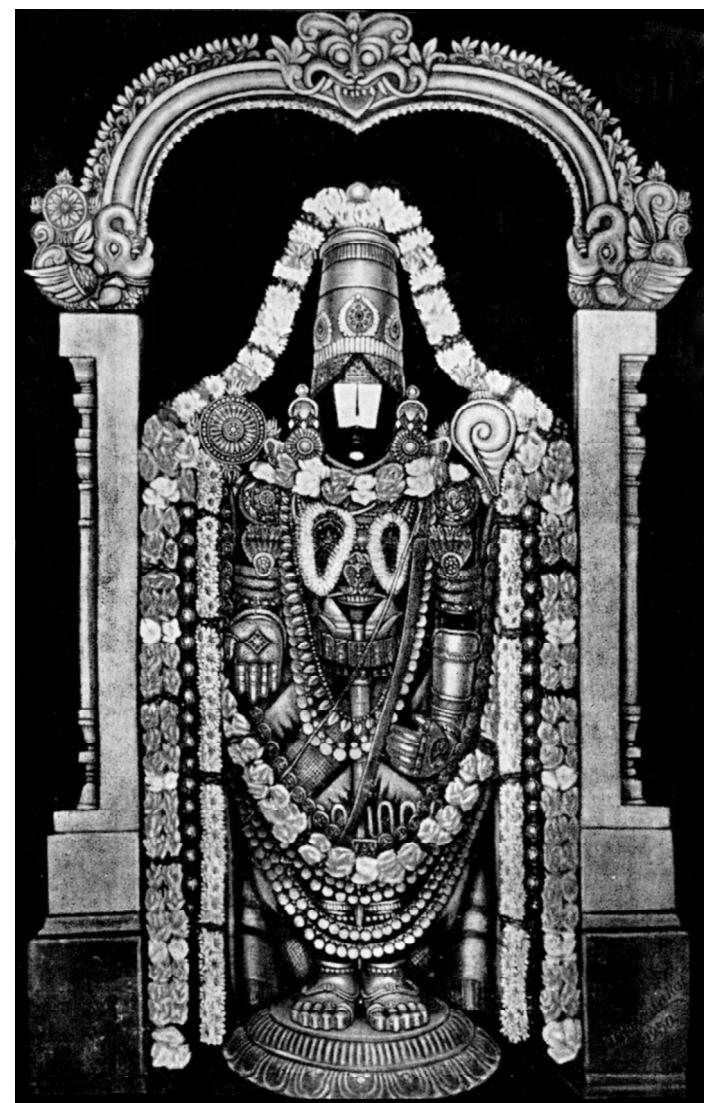
कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्,
तिरुपति

विषय-सूची

1. तिरुनीलकण्ठ नायनार

वेद ब्राह्मणों का आवास चिदंबरम में, कुम्हार जाति में तिरुनीलकण्ठ नायनार का जन्म हुआ। वह भगवान शिवजी का भक्त था। शिवजी के प्रति उसकी भक्ति स्थिर थी। साथ ही शिवजी के प्रति अमित निष्ठा भी थी।

एक बार तिरुनीलकण्ठ नायनार, एक वेश्या के घर जाकर लौट आया। यह बात उसकी पत्नी को असह्य लगी। अपनी पत्नी को मनाने के लिए, उसने मृदु मधुर वचनों से प्रसन्न करने के लिए उसे अपने आलिंगन में बन्द करना चाहा। उसकी पत्नी का क्रोध घटा नहीं। वह कुपित होकर बोली - 'यदि आप हमें छुएँगे तो तिरुनीलकंठेश्वर की कसम है।' इस प्रकार उसने पति को रोका। यह व्यवहार तिरुनीलकण्ठेश्वर को भाया नहीं। उसने अपनी पत्नी को देख - 'तूने हमें नहीं छूने के लिए कहा। आज के बाद तुझे ही नहीं, अन्य किसी स्त्री का स्पर्श नहीं करूँगा, मैं उसे मातृमूर्ति ही मानूँगा' कहते हुए प्रतिज्ञा की। तब से वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने लगा। यौवन की देहरी पार कर वह वृद्धावस्था में पहुँच गया। उसकी भक्ति और श्रद्धा को जगत भर में व्याप्त करने के उद्देश्य से शिवजी वीरशैव साधु के भेस में उसके घर पहुँचा।

माया शिव ने अपने हाथ के भिक्षा - पात्र नीलकंट को देकर - 'यह बहुत अपूर्व बर्तन है। इसे सुरक्षित रखना। जब मुझे जरूरत पड़ेगी, इसे मैं ले लूँगा।' वह इसके बाद चला गया। तिरुनीलकण्ठ ने उसे एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया। शिवजी ने अपनी शक्ति से उसे गायब कर दिया।

कुछ समय के पश्चात् शिवयोगी, नीलकण्ठ के पास आकर - 'मैं ने तेरे पास एक भिक्षा पात्र को सुरक्षित रखने के लिए दिया था। उसे मुझे वापस कर।' नीलकण्ठ ने सारे घर में ढूँढा, पर वह मिला नहीं। अत्यंत विनीत हो उसने शिवयोगी से कहा - 'महात्मन्! आपके भिक्षापात्र के बदले मैं एक सुंदर भिक्षापात्र दूँगा।' यह सुन शिवयोगी ने आप से बाहर होकर कहा - 'तूने मेरे भिक्षापात्र को चुराया है। यदि तुमने नहीं चुराया, तो अपनी पत्नी के हाथ को पकडकर इस सरोवर में डूबकी लगाते कसम खाओ।' इस पर तिरुनीलकण्ठ ने अपनी पत्नी के साथ उसने जो शपथ ली थी, उसके बारे में बताकर अपनी विवशता को बताया। 'उसके हाथ को पकड़ कर मैं डूबकी ले नहीं सकता। यह कदापि संभव नहीं।' शिवयोगी यह सुन कर लाल पीला हो गया। उसने तिल्लै के ब्राह्मणों से तिरुनीलकण्ठ की शिकायत की।

तिल्लै के ब्राह्मणों ने तिरुनीलकण्ठ को बुलाकर कहा - 'शिवयोगी ने जैसा कहा वैसे ही अपनी पत्नी के साथ सरोवर में डूबकी लगाते हुए सच-सच बताओ।' उन्होंने अपना निर्णय कह सुनाया। तब तिरुनीलकण्ठ ने गाँववालों की बात रखने के लिए उसने और उसकी पत्नी ने एक लकडी के दोनों कोनों को पकड़कर सरोवर में डुबकी लगाई। बाद में पानी के ऊपर उठने पर उसकी काया ही पलट गई। बुढ़ापे की केंचुली छोड़, वह जवान बन गया। शिवगामी सुन्दरी समेत शिवजी ने उन्हें दर्शन दिया। कहा - 'तुम दोनों हमारी सन्निधि में नित्य यौवन से विलसित होकर शाश्वत रूप से रहो।' इतना कह कर उन्हें आशीष देकर चला गया।

2. इयर पगै नायनार

पूमबुहार नगर में इयर पगै नामक नायनार रहता था। वह एक नामी व्यापारी तथा शिवभक्त था। शिवभक्त उससे जो भी पूछता उसके लिए न कहना जानता नहीं था। दानी स्वभाव के कारण उसका नाम खूब फैल गया। शिव भक्त जो माँगते थे, उसे वह बिना संकोच के दे देता था। यह लोक - स्वभाव के विरुद्ध था। इस कारण सभी उसे इयर पगै (लोक प्रवृत्ति के विरुद्ध) नायनार कहकर बुलाते थे। अपने भक्त के दान - स्वभाव को जगत प्रसिद्ध बनाने के उद्देश्य से शिवजी एक धूर्त ब्राह्मण के भेस में इयर पगै के घर आया। नायनार ने उस ब्राह्मण शिव भक्त की खूब आवभगत की। अपने सामने खड़े इयर पगै नायनार को देख 'मैं तेरी पत्नी को चाहता हूँ' कहा। यह सुन नायनार किंचित भी विचलित नहीं हुआ। उसने संतोष के साथ अपनी पत्नी को उस ब्राह्मण को समर्पित किया। तब ब्राह्मण ने कहा - 'महाशय! मैं जब तेरी पत्नी को साथ ले जाऊँगा तो तेरे रिश्तेदार मिलकर मेरा अहित कर सकते हैं। इस कारण मुझे नगर की सीमा पार करने तक तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।' उसने आज्ञा दी। तुरत नायनार ने उनके पीछे एक हाथ में तलवार लिए दूसरे हाथ में ढाल पकड़े शपथ लिया कि जो उन्हें रोकने की चेष्टा करेगा, मैं उसे मौत के घाट उतार दूँगा।

जैसा उसने सोचा वैसे ही नायनार के रिश्तेदार हथियारों के साथ धूर्त ब्राह्मण के वध के लिए प्रस्तुत हो गए। नायनार ने बड़ी निर्दयता के साथ सबको परलोक पहुँचा दिया।

अपनी पत्नी को उत्तम वैदिक को समर्पित कर कहा - 'महाशय! अब आप निर्भय होकर जाइए।' इसके पश्चात् वह अपनी पत्नी को सदा

के लिए बिदाकर सहर्ष घर लौट आया। अन्य लोगों के लिए जो असंभव कार्य था उसे उसने संभव कर दिखाया। शिवभक्त इयर पगै नायनार को ब्राह्मण ने जोर से पुकारा। उसकी आवाज को सुन 'रुको! यह दास आ रहा है। तेरा अहित करने को जो आगे आयेगा उसे तलवार से खण्डित कर दूँगा।' कहकर वह दौड़ता हुआ ब्राह्मण के पास गया। वहाँ जाने पर ब्राह्मण का पता न था। रत्नाभरणों से भूषित पत्नी मात्र दिखाई दी। इतने में वृषभ वाहन पर आरुढ़ होकर प्रभु नटराज उसके आगे प्रकट हुए। 'तुम अपनी पत्नी सहित कैलाश आ जाओ', कहकर शिवजी ने अपनी करुणा को दर्शाकर उन पर अनुग्रह किया। मृत नायनार के रिश्तेदारों एवं जाति के मुखियाओं को पुनर्जीवित कर, शिवलोक में उन्हें स्थान देकर, उनको सुख - संतोष से जीने का वर प्रदान किया।

3. इलियामूगुड़ि मार नायनारु

इलियामूगुडि नामक शैव धाम में मारन् नाम से एक शिवभक्त का जन्म हुआ। वह अपने घर आये शिवभक्तों का सादर आवभगत कर सर्वव्यंजन युक्त भोजन कराकर उन्हें तुष्ट रखता था। जब मारन् नायनार गरीब बना तब भी वह भक्तों को संतुष्ट रखने का दानी गुण रखता था। उसके दान-गुण को जगत प्रसिद्ध करने के लिए शिवजी ने उसे गरीब बना दिया। गरीबी में भी वह शिवभक्तों की आवश्यकताओं को पूरा करता था। एक दिन की बात है। वर्षा की ऋतु में रात के समय भूख के मारे तड़पता वह सपत्नीक सो गया था। ऐसे समय उसकी परीक्षा लेने के लिए एक मुनि के भेस में शिवजी आ गये।

मारन् नायनार अतिथि को कुछ खिलाना चाहता था। 'इस अतिथि को भोजन देने का क्या कोई रास्ता है?' कहकर उसने अपनी पत्नी से

पूछा। पत्नी ने पति से कहा - 'घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है। पड़ोसी भी देंगे नहीं। आपने आज दिन में अपने खेत में दानों को बोया था। 'आप यदि चुनकर उन्हें लायेंगे तो मैं खाना पकाऊँगी।' पत्नी की बातें सुन उसे लगा कि कोई बड़ी निधि मिल गयी है। वह अत्यंत प्रसन्नता के साथ अपने खेत के ओर चल पड़ा। आसमान पर घने बादल छाये थे। बिजली चमक रही थी। जोर की बरसात होने लगी। हर ओर अंधकार फैला हुआ था। मारनायनार ने सिर पर एक टोकरी रख खेत में प्रवेश किया। पैरों से टटोलते हुए खेत में अंकुरित अनाज जो पानी में तैर रहे थे, उनको टोकरी भर इकट्ठा कर उन्हें घर ले आया। मारन् की पत्नी ने उन्हें पानी में डाल खूब धोया। उसने पति से कहा कि भोजन बनाने सूखी लकड़ियाँ नहीं हैं। नायनार छत से सूखी लकड़ियों को तलवार से काटकर पत्नी को दिया। लकडियों को जलाकर उसकी पत्नी ने अंकुरित अनाज को भून लिया। उसके पश्चात् उन्हें कूट कर चावल पकाया। पति ने खेत से पत्तों को लाकर दिया। उनसे उसकी पत्नी ने सब्जी बना दी। अपने घर आये अतिथि, मुनि के पास जाकर मारन् नायनार ने उसे भोजन के लिए आमंत्रित किया। उसी समय उनके आगे शिवजी प्रत्यक्ष हुए। शिवजी ने कहा - 'तुम दोनों मेरे अनुग्रह के पात्र बन गए। अब शिवलोक आकर सुख - चैन से रहो।' उन्हें आशीष भी दिया।

4. मेयू पोरुलू नायनार

तिरुक्कोवलूर को राजधानी बनाकर मेय पोरुल् नायनार चेदिनाडु प्रदेश पर न्यायसंगत शासन करता आया था। सभी शिव मंदिरों में प्रति दिन आठों पहर पूजाएँ होती थीं। यह राजा की आज्ञा थी।

ऐसे राजा मेय् पोरुल् नायनार को हराकर, उसके राज्य को हड़पने के लिए मुत्तनाथ नामक शत्रु नरेश ने चेदिनाडु पर युद्ध की घोषणा की। उस युद्ध में मुत्तनाथ पराजित एवं अपमानित हो भाग गया। इस प्रकार मुत्तनाथ अपना सर्वस्व खो गया। मुत्तनाथ यह जान गया कि युद्ध में मेय् पोरुल् नायनार को हराना सरल नहीं है। नायनार को शिवभक्तों पर अमित प्रेम था। यह जानकर मुत्तनाथ, मेय् पोरुल् नायनार को हराने के विचार से एक शिवभक्त के भेस में तिरुक्कोवलूर आया। मुत्तनाथ माया तपस्वी के भेस में एक तलवार लेकर ताडपत्र ग्रंथ रखी हुई थैली में छिपाकर नायनार के भवन के समीप पहुँचा। राजा के शयनागार के आगे दत्त नामक रक्षकभट ने 'अब राजा सो रहे हैं' कहा। यह सुन मुत्तनाथ ने - 'मैं राजा को ज्ञान की शिक्षा देने आया हूँ। तू यहीं रह', कहकर भीतर गया। राजा सो रहा था। उसने वहीं रानी को देखा। नायनार की पत्नी ने माया तपस्वी को देख अपने पति को उठाया। राजा जाग गया और मुत्तनाथ को शिवजी का भक्त मान उसे सादर नमन किया। मुत्तनाथ ने नायनार से कहा - 'शैव आगमशास्त्र संबन्धी ज्ञान जो इस भूमण्डल में कहीं भी लभ्य नहीं है, ऐसा ज्ञान तुम्हें देने आया हूँ। अपनी पत्नी को यहाँ से जाने की आज्ञ दो। हम दोनों को एक स्थान पर बैठना होगा।' तब नायनार ने अपनी पत्नी को भीतर जाने की आज्ञा दी। वह हाथ जोडकर धरती पर बैठ कर शैव आगमशास्त्र को पढ़ने की प्रार्थना की। मुत्तनाथ ताड़पत्र खोलने का स्वाँग भरते हुए, मेय् पोरुल् नायनार को नमस्कार करते समय, तलवार से राजा के सिर को धड़ से अलग कर दिया। उसी समय राजा का अंगरक्षक दत्त वहाँ प्रवेश कर अपनी तलवार से मुत्तनाथ का सामना किया। तब रक्त सिक्त नायनार धरा पर गिरते हुए - 'हे दत्त! मुझ पर वार करनेवाला परमेश्वर का भक्त है। कोई इसे

न रोके। तू उसका ख्याल रखना। सावधानी से इसे सीमा पार करा देना।' राजा की आज्ञा के अनुसार ही दत्त ने अपनी तलवार हाथ में लेकर उस तपस्वी को तिरुक्कोवलूर नगर की सीमाओं के उस पार पहुँचा दिया। अपना शत्रु होते हुए भी उसने मुत्तनाथ को सुरक्षित छोड़ अंतःपुर में प्रवेश किया। राजा अंतिम साँसें गिन रहा था। वह यह सुनना चहता था कि मुत्तनाथ सुरक्षित सीमा पार चला गया है। राजा से दत्त ने कहा - 'महाराज! मैं ने मुत्तनाथ को सीमा पार करा दी है।' मेय् पोरुल् नायनार ने जब यह समाचार सुना तो वे प्रसन्न हो गए। उसने शिवजी को भक्ति पूर्वक नमस्कार किया।

अपने हृदय में स्थापित कर ध्यान करते मेय् पोरुल् नायनार को शिवजी ने सपत्नीक दर्शन दिया। देवताओं के लिए भी असंभव अपनी सन्निधि में स्थान दिया। मेय् पोरुल् नायनार ने शिवजी की सेवा करते हुए अपने को धन्य बना लिया।

5. विरन्मिण्डा नायनार

तिरुचेंगुन्नूरु नामक एक गाँव है। शायद वेलालर जात को विख्यात बनाने के उद्देश्य से विरन्मिण्ड नायनार उस गाँव में अवतरित हुए। बचपन से ही वे शिवभक्तों पर अपार प्रेम भाव रखते थे। उन - उन पावन धामों के शैवालयों के दर्शन कर नायनार उनके नाम-स्मरण में जीवन के पल काटने लगे।

एक बार वे तिरुवारूर जाकर वन्मीकनाथ के दर्शन कर उनके आगे प्रणत हुए। उस समय सुंदरमूर्ति नायनार तिरुवारूर मंदिर में प्रवेश कर गए। वहाँ देवासिरिया मण्डप में शिवभक्त एकत्रित हुए थे। उन्हें नमस्कार किये बिना एक ओर बढ़ते जाते सुंदर को देख विरन्मिण्डा नायनार ने

'यह हमारा विरोधी' है कहकर उद्घाटित किया। 'यों शिवभक्तों का तिरस्कार करने के कारण यह शिवजी के विरोधियों में गिना जाता है।' ऊँची आवाज में विरन्मिण्डा नायनार ने कहा। इनकी बातों को सुंदर ने सुना। तुरन्त उन्होंने अपनी गलती को पहचाना। शिवभक्तों के महत्व को सुंदर ने 'तिरुत्तोण्डा तोगै' नामक ग्रंथ में अंकित किया। तब मादेव जी मुदित हो 'हम सदा भक्तों के दिलों को आवास बनाकर रहते हैं', कहकर ऊँची आवाज में इस बात को घोषित किया। इस रचना के प्रेरक श्री विरन्मिण्डा नायनार थे। उन्होंने सदा शिवभक्तों की सेवा की। परिणामस्वरूप वे शिवगणों के नेता बन महादेव के चरणों की सन्निधि पाकर विख्यात् हुए।

6. अमर्नीति नायनार

'एलैयारै' नामक नगर में एक वैश्यों के परिवार में अमर्नीति नायनार नामक शिवभक्त का जन्म हुआ। एक बार शिवजी कौपीन (लंगोटी) की महिमा को अमर्नीति नायनार को बताकर, उसे अपनी करुणामय आँखों से अनुग्रह करने के विचार से ब्राह्मण ब्रह्मचारी के भेष में उसके पास आया। ब्रह्मचारी वेषधारी को देखते ही अमर्नीति नायनार ने तुरन्त आकर उसे नमस्कार किया। इसके पश्चात् वह 'उसे अपने मठ में भोजन कर हमें धन्य बनाइये', कहकर नायनार ने उस माया ब्रह्मचारी से प्रार्थना की। ब्रह्मचारी ने उसे स्वीकार कर कहा - 'मैं कावेरी नदी में नहाकर आ जाऊँगा। इस कौपीन को सुरक्षित रखिए। स्नान कर मुझे इसे दीजिएगा।' अपने कौपीन को नायनार के हाथों में रख स्नान के लिए गया। नायनार ने उसे एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया। माया ब्राह्मण ने उसे अपनी माया से अदृश्य कर दिया। कुछ समय बाद कावेरी में नहाकर

ब्राह्मण मठ में लौट आया। 'नदी में नहाने से मेरा शरीर भीग गया है। मैं अपना कौपीन यहाँ छोड़ गया था। उसे ला दीजिए', नायनार से ब्राह्मण ने कहा। नायनार ने जल्दी जल्दी भीतर जाकर कौपीन के लिए हाथ बढ़ाया। लेकिन वहाँ नहीं था। तब नायनार ने ब्राह्मण के निकट आकर कहा - 'महाशय! आपने मुझे जो कौपीन दिया वह दिखाई नहीं दे रहा है। मैं सुरक्षित स्थान पर ही उसे रखा था। मैं एक नया अच्छा कौपीन ले आया हूँ। उसके बदले इसे स्वीकार कर मेरे दोष को क्षमा कर दीजिए', उसने प्रार्थना की। ब्राह्मण ने क्रोध से - 'मैं तेरे पास जो कौपीन छोड़ गया था, उसे तूने चुराया और उसके बदले दूसरे कौपीन को लेने को कहते हो? क्या यह बात आपको न्याय - संगत लगती है?' कहते हुए वह आपे से बाहर हो गया। नायनार ने 'महाशय! इस दास के अपराध को क्षमा कीजिए। इस कौपीन के बदले आपके मन पसंद के रेशमी वस्त्र, और माणिक लेकर मुझ पर अनुग्रह कीजिए।' कह कर वह ब्राह्मण तिरुचरणों पर भक्तिपूर्वक झुक गया। यह देख ब्राह्मण शान्त हो कर - 'सोना, माणिक, नूतन वस्त्र मुझे क्यों? कौपीन के वजन के समान मुझे एक कौपीन दो तो पर्याप्त है।' नायनार एक तराजू लाया। ब्राह्मण ने अपने कौपीन को तराजू के एक - पलडे में रखा। नायनार ने शिवभक्तों को देने कई कौपीनों को तैयार कर रखा था। उन्होंने एक - एक कर सारे कौपीनों को दूसरे पलड़े में रखा। फिर भी ब्राह्मण का कौपीन का पलड़ा उठा ही नहीं। नायनार ने अपने पास के सोना, चाँदी, अमूल्य रत्न, धन, धान्य राशियों को लाकर पलडे में रखा। फिर भी वे समान नहीं हो सके। तब नायनार ने कहा - 'महात्मन्! मैं ने अपनी सारी संपदा तराजू के पलड़े में रख दिया। मैं, मेरी पत्नी, मेरे पुत्र आपकी अनुमति से पलड़े में चढ जायेंगे।' यह सुन ब्राह्मण ने उन्हें आज्ञा दी। 'हम

भगवान की भभूति के सच्चे भक्त हैं। हम भक्ति में, प्रेम में निष्कलंक हैं तो हमारे पलड़े में चढ़ते ही इस तराजू का पलड़ा कौपीन के समान हो जाये।' ऐसा कहकर तिरुवल्लूर में स्थित कल्याण सुंदरेश को नमन कर पंचाक्षरी का पठन करते हुए सभी तराजू के पलड़े में चढ़ गये। उस ब्राह्मण द्वारा धारण किया गया कौपीन तथा अमर्नीति नायनार जो सच्चा शिवभक्त था - दोनों पलड़े समान हो गए।

वहाँ उपस्थित लोगों ने इस अद्‌भुत घटना को देख चकित रह गये। सबने नायनार की पावन भक्ति को देख उसे नमन किया। कल्याण सुंदरेश्वर जी तथा जगन्माता कल्याण सुंदरी के संग आकाश में प्रकट होकर अमर्नीति नायनार को दर्शन के साथ-साथ अक्षुण्ण शिवलोक पद भी प्रदान किया।

7. एरिबत्त नायनार

करुवूरु नगर में एरिबत्त नायनार नामक भक्त सदा शिवभक्तों की सेवा में जीवन-यापन करता था। यही उसके जीवन का उद्देश्य था।

करुवूरु अनिलै मंदिर में विराजमान महादेव पर अचंचल भक्ति एवं प्रपत्ति के साथ शिवगामी यांडार नाम का मुनीश्वर तड़के ही उठ, प्रभु के लिए फूल चुनकर, उन्हें मालाओं में बदल कर प्रभु महादेव को समर्पित कर, स्वयं प्रसन्नता का अनुभव करता था।

एक दिन शिवगामी यांडार फूलों को चुनकर आते समय एक शाही हाथी जिसके कपोलों से मदजल स्रवित हो रहा था, उसे देख नगर जन भयभीत हो दौड़ रहे थे। वह उन्हें एक बड़ा पहाड़ सा भीकर लग रहा था। वह हाथी महावत के आदेशों को ठुकराकर अपने आगे मंदिर जाते

हुए शिवगामी यांडार का पीछे करता हुआ भगवान की मालाओं की टोकरी को सूण्ड से खींच नीचे गिरा दिया। शिवगामी यांडार नीचे गिरकर हाथों से धरती को पीटते - 'हे परमेश्वर! तेरे लिए मैं फूलमालाएँ ले आ रहा था। वे सब धरती पर बिखर पड़े हैं। अब क्या कर सकूँगा?' वह जोर - जोर से विलाप करने लगा।

इस प्रकार शिवगामी यांडार के रुदन को एरिबत्त नायनार ने सुना। 'इस हाथी के कारण शिवभक्तों को बहुत ही क्लेष हुआ। कोई भी आकर मुझे रोके, मैं कुछ न सुनूँगा। उसे काट कर रख दूँगा।' वह क्रोध से गर्जन करता, चीखता - चिल्लाता हाथ में कुल्हाड़ी ले जोर से उछल कर उस हाथी पर बैठ गया। उसने हाथी की सूण्ड पर कुल्हाड़ी से वार किया, जिससे हाथी का सूण्ड समूल कट कर धरा पर आ गिरा। इससे वह हाथी काले पर्वत के समान धराशायी हो गया। हाथी का महावत और उसके पीछे आते सैनिकों ने एरिबत्त नायनार पर वार कर उसका अंत करना चाहा। एरिबत्त नायनार ने उन्हें भी हरा दिया। बचे - खुचे सौनिकों ने दौड़ कर राजा को इस बात की सूचना दी। इस पर राजा चतुरंग सेना को जुटाकर हाथी जहाँ धराशायी हुआ, उस प्रदेश पर पहुँच गए। वहाँ हाथ में कुलहाड़ी लिए एरिबत्त नायनार शिवभक्त को राजा ने देखा। राजा ने सोचा - 'यह तो बड़ा शिवभक्त है। बिना किसी कारण के वह हाथी का वध नहीं कर सकता।' मन में इस विचार को रख उसने सैनिकों से नहीं रह जाने को कहा। वह अकेला एरिबत्त नायनार के पास पहुँच कर उसे नमस्कार किया। चोल सम्राट को देख शिवभक्त नायनार ने कहा - 'हे चोल नरेश! शिवगामी यांडार नामक भक्त भगवान महादेव को समर्पित्त करने के लिए फूलमालाओं को ले जा रहा था। इस मदमत्त हाथी ने उन्हें तितर - बितर कर नष्ट कर दिया। मैं ने इस अपराध के लिए उसे दण्ड

दिया। जब हाथी यह दुष्कर्म कर रहा था, तब इसके महावत और रक्षक देखते रह गए। किसी ने उसे रोकने का यत्न नहीं किया। इस कारण वे भी मारे गए। यही गुजरी बात है।', 'शिवभक्तों का इस हाथी ने जो अपकार किया वह साधारण नहीं है। केवल हाथी और महावत ही दोषी नहीं, मैं भी इसका दोषी हूँ। इस दुष्कार्य के लिए मैं भी अपराधी हूँ। अतः मुझे भी मार देना चाहिए।' राजा ने यह कहकर अपनी कमर में लटकती तलवार को एरिबत्त नायनार को देकर कहा - 'मुझे भी मार डालो कहा।' 'इस प्रेम की साकार मूर्ति को मैं ने गलत समझा। इस तलवार से अपने आपको मार लूँगा। इससे इस दुष्कर्म का निदान होगा।' ऐसा सोच राजा की तलवार से अपने कण्ट को धड़ से अलग करने को उद्यत हुआ। तभी गगन में एक भयंकर आवाज हुई। 'तुम्हारी भक्ति को जगत - प्रसिद्ध करने के लिए भगवान महादेव ने इस घटना को साकार किया।' ये बातें सुनाई दीं। इसके साथ ही महावत, रक्षक और हाथी भी नींद से उठने के समान उठ खड़े हुए। स्वर्ग से देवताओं ने दोनों पर पुष्प - वर्षा की। इस अद्भुत को देखकर प्रसन्न मन से शिवगामी यांडार वहाँ आकर खड़ा हो गया।

एरिबत्त नायनार सदाचारी जीवन बिताकर अंत में पावन कैलाश पर्वत के शिवगणों के मुखिया बन विलस उठा।

8. एनादिनाथ नायनार

एननल्लूरु नामक सुंदर गाँव में एनादिनाथ का जन्म हुआ। यह एक महान शिवभक्त था। खड्ग - विद्या शिक्षण में निपुणता प्राप्त कर अपनी वृत्ति में अजेय नायक के रूप में प्रख्यात हुआ था। उस काल में अति

शूर नामक व्यक्ति खड्ग - विद्या की शिक्षा देते हुए इस संसार में अपने को अजेय मान घमण्डी बन गया था।

जैसे - जैसे समय बीतता गया खड्ग - शिक्षा देकर जीवन - यापन करने वाले अतिशूर की आय घटने लगी। इधर एनादिनाथ की आय बढती गयी। यह देख अतिशूर ने एनादिनाथ को दुश्मन समझने लगा। यह दुश्मनी बढ़ती ही गई। अपने रिश्तेदारों के साथ मिलकर उसने एनादिनाथ के घर पर जाकर युद्ध के लिए ललकारा। एनादिनाथ ने एक हाथ में तलवार, दूसरे हाथ में ढाल लेकर युद्ध के लिए सन्नद्ध हुआ। 'इस युद्ध में जो विजयी होगा वही खड्ग-विद्या की शिक्षा - वृत्ति का हकदार होगा।' दोनों ने इस विषय में समझौता कर लिया। दोनों ओर के वीरों के समक्ष दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। अंत में अतिशूर एनादिनाथ के हाथों हार कर पीठ दिखाकर रण - क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। हार के कारण अतिशूर एक दिन भी सो न सका। वंचना से एनादिनाथ को हराने का उसने एक षड्यंत्र रचा।

'हम दोनों एकांत में द्वन्द्व युद्ध करेंगे। तू युद्ध के लिए आ जा।' अतिशूर ने अपने आदमी के द्वारा यह संदेश भेजा। एनादिनाथ इसके लिए मान गया। माथे पर भभूति लगानेवाले का एनादिनाथ अहित नहीं करेगा, यह जानकर उसने पूरे माथे पर विभूति लगा लिया। विभूति न दिखाई दें, इसके लिए उसने ढाल की सहायता ली। एनादिनाथ ने जब खड्ग से वार करने को तलवार उठाया, उसने अतिशूर के माथे की विभूति को देखा - 'हाय यह क्या हो गया? मैं ने कितना पाप किया? मुझे मालूम न था कि यह शिवभक्त है। यदि जानता तो कदापि युद्ध के लिए तैयार नहीं होता।' यह सोच उसने अपने हाथ की तलवार को

फेंकना चाहा। लेकिन शस्त्र विहीन का अपयश उसे न मिले यह सोच हाथ में पकडे -सा स्वाँग भरने लगा। अतिशूर के तलवार ने उसके प्राणों को हर लिया। एनादिनाथ की भक्ति - भावना से प्रसन्न होकर महादेवजी प्रकट हुए। महादेवजी उसे सदा अपने समक्ष देखना चाहते थे। इसलिए एनादिनाथ को अपने गणों में स्थान दिया। इस प्रकार एनादिनाथ भगवान शिवजी का अनुग्रह प्राप्त कर धन्य बना।

9. कण्णप्प नायनार

पोत्तपिनाडु में 'उडुप्पूर' नामक एक प्राचीन गाँव है। उस गाँव में रहनेवाले सभी गिरिजन हैं। एक शिकारी जिसका नाम 'नाग' है वह उनका राजा था। उसकी जीवन - सहचरी का नाम दत्तै था। मुरुगदेव के अनुग्रह से उनको एक पुत्र हुआ। उन्होंने उसका नाम तिन्नडु रखा। वे उसे अत्यंत प्यार से देखते करते थे। कुछ बर्षों के बीत जाने के बाद वह धनुष - विद्या सीखने लगा। कुछ ही समय में तिन्नडु धनुष - विद्या तथा अन्य विद्याओं में पारंगत बन गया।

उस समय वहाँ के पहाड़ों में जहाँ खेतीबाडी होती थी, वहाँ सूअर, शेर, रीछ, जंगली जानवर आदि खेतों और जनता को हानि पहुँचाने लगे। जनता ने अपने राजा 'नाग' से अपना दुखड़ा सुनाया। 'नाग' ने अपने पुत्र तिन्नडु को बुलाकर 'इस भीलजाति की रक्षा करने की जिम्मेदारी हमारी है। क्रूर जानवरों से इनकी रक्षा कर।' ऐसा कहने पर तिन्नडु ने धनुष - बाण लेकर शिकारियों के साथ जंगल में प्रवेश किया। जंगली सूअर, हिरण, भालू, जंगली भैंसा, बारहसिंगा, हाथी, क्रूर शेर आदि को अपने नुकीले बाणों से मार दिया। उस समय तिन्नडु को एक सूअर दिखाई दिया, जो तेजगति से दौड़ता जा रहा था। तिन्नडु ने उसका पीछा

किया और अपनी तलवार से उसे दो टुकड़ों में बाँट दिया। कुछ समय तक आराम करने के पश्चात् उसने सुवर्णमुखी नदी में स्नान कर निकट के पहाड़ के पास पहुँचा। पूर्वजन्म के तपोफल के कारण तिन्नडु कालहस्ती के पहाड़ पर लिंग के आकार में विलसित महादेव को देखा। भक्ति के आवेग में दौड़ते हुए जाकर लिंग को अलिंगन में बद्ध किया। 'भगवान! क्रूर जानवरों के इस जंगल में बिना किसी साथी के तेरा इस प्रकार अकेले पहाड़ पर रहना क्या उचित है? तुझे भोजन खाकर कितने दिन हुए होंगे?' अत्यंत वेदना के साथ उसने कहा। तुरन्त उसने अपने द्वारा मारे गये सूअर के माँस को आग में भली - भांति पकाकर, पहले स्वयं चखकर, माँस को एक दोने में रख लिया। महादेव को नहाने के विचार से उसने स्वर्णमुखी नदी के जल को अपने मुँह में भर लिया। कुछ फूलों को चुन कर सिर पर रख लिया। उसने शिवजी के पास जाकर माँस के दोने को शिवजी के आगे रखकर कहा - 'हे प्रभु! अच्छा माँस ले आया हूँ। इसे आप स्वीकार कीजिए।' उसने अपने मधुर वचनों से महादेव को माँस खिलाया। उसके साथी शिकारियों की बातों को ठुकरा कर वह घर न जाकर उस रात वहीं रह गया। सूर्योदय से पूर्व ही उठकर शिवजी को माँस खिलाने के उद्देश्य से शिकार करने गया।

श्रीकालहस्तीश्वर की, सूर्योदय के पूर्व ही पूजा आदि कार्यों को पूरा करने के लिए एक मुनिवर वहाँ आये। शिवजी के पास पड़े माँस के टुकड़ों को, हड्डियों को देखकर कहा - 'हाय! यह कैसा दृश्य है। इन असह्य पदार्थों को यहाँ किसने रखा होगा? मुनिवर ने व्यथित होकर उस स्थान को जल से साफ़ किया। स्वर्णमुखी के पावन जल से अभिषेक आदि पूजाएँ की। तत्पश्चात् वह अपने स्थान पर तप करने चला गया।

मुनिवर के जाने के उपरान्त तिन्नडु दोने में शहद से सने माँस, फूल और अभिषेक के लिए जल लेकर लिंग के पास पहुँचा। उसने मुनिवर के द्वारा रखी पूजा सामग्री आदि वस्तुओं को हटाकर अपने द्वारा लाये गये माँस को समर्पित किया।

उस दिन की रात को सपने में मुनिवर के आगे शिवजी प्रकट हुए और कहा - 'तुझे मैं उस शिकारी भक्त को दिखाऊँगा।' मुनिवर हर दिन की तरह यथा समय भोर से पूर्व ही प्रभु की पूजा कर, पिछले भाग में छिपकर खड़े हो गए। तिन्नडु हिरण का शिकार कर उसके माँस को लिए तेज गति से वहाँ आया। मुनिवर को तिन्नडु की भक्ति की विशेषताओं को बताने के लिए महादेव ने अपने एक नेत्र से रक्त टपकाने का दृश्य प्रस्तुत किया। टपकते रक्त को देखकर वह मूर्छित हो गया। जंगल भर ढूँढ कर उसने जडी बूटियों का संग्रह किया। उसके रस को पीसकर शंकर के नेत्र में लगाया। फिर भी खून का बहना रुका नहीं। 'इसे रोकने के लिए मैं क्या करुँ?' उसे बड़ों की बात याद आई - एक के शरीर के किसी भाग को रोग मुक्त करना होतो, वैसे ही शारीरिक अंग को बदले में देना होगा। प्रभु के आगे खड़े हो उसने अपनी आँख को बाण से उखाड़ कर प्रभु के नेत्र के स्थान पर लगा दिया। उससे रक्त का रुकना बंद हो गया। तिन्नडु की खुशी का कोई पार न रहा। उसकी भक्ति को जगत में प्रकट करने के विचार से कालहस्तीश्वर, दूसरे आँख से खून बहाने लगा। अब तिन्नडु अपने पैर को प्रभु के बायें नेत्र पर लगाकर बाण से अपने दूसरे नेत्र को उखाड़ने के लिए तैयार हुआ। यह देख कालहस्तीश्वर प्रकट हुए। उसने तिन्नडु के हाथ को पकड़ कर 'हे असमान भक्ति को रखने वाले! तू सदा मेरे दायीं ओर रह।' ऐसा कह कर आशीष दिया।

10. गुंगुलियक्कलय नायनार

चोल देश में 'तिरुक्कडऊरु' नामक एक गाँव है। उसमें कलयनार नामक एक वैदिक ब्राह्मण रहता था। वह महादेव को नित्य परिमल युक्त गुग्गुल धूप लगाने के कार्य में संलग्न रहता था। इस कारण जनता उसे गुंगुलिया कलयनार नाम से बुलाना प्रारंभ किया। शिवजी ने एक बार उसकी भक्ति की परीक्षा लेनी चाही। शिवजी की लीला विलास के कारण वह दरिद्र बन गया। फिर भी वह धूप की पावन सेवा को रोका नहीं। लगातार वह अपना कार्य करता जाता था। कुछ ही दिनों में उसने अपनी सारी संपत्ति खो दी। रिश्तेदारों, पत्नी और बच्चों को भूख से बिलखना पड़ा। घर में खाने को कुछ भी नहीं था। दो दिन भोजन के अभाव में बच्चे बेहोश हो गए। यह देख उसकी पत्नी ने अपना सोने का मंगल सूत्र पति को देकर 'धान ले आइए' कहा।

कलयनार सोने का मंगल सूत्र लेकर धान खरीदने निकल पड़ा। तब उसके आगे एक व्यापारी गुग्गुल की गठरी लिए जा रहा था। कलयनार उस व्यापारी को देख 'मैं सोना दूँगा, इसके बदले तुम गुग्गुल की गठरी दे दो' कहा। व्यापारी तुरन्त देने को तैयार हुआ। कलयनार ने अपनी पत्नी का मंगलसूत्र उसके हाथ में रखा। व्यापारी ने उसे लेकर गुग्गुल की गठरी दे दी। कलयनार उसे लेकर मंदिर की ओर तेज गति से चल पड़ा। शिवजी के भण्डार में उस गठरी को सुरक्षित रख, भगवान के चरणों की सेवा करते वहीं रह गया। इधर कलयनार मंदिर में प्रभु - सेवा में लीन था, उधर प्रभु की कृपा से उसका घर धन - धान्य से, सुवर्ण रत्नाभूषणों से, अतुलित संपदा से भर गया। धान के लिए प्रतीक्षारत कलयनार की पत्नी एवं बच्चे भूख से बेहोश हो कर सो गए। तब महादेव

ने कलयनार की पत्नी के सपने में प्रकट होकर उसे घर की अपार संपत्ति की सूचना दी। उसने नींद से जाग कर कहा - 'शिवजी ने ही हम पर अनुग्रह किया।' दोनों हाथ जोड़ कर उसने परमात्मा को नमस्कार किया। तदनंतर वह बच्चों तथा पति के लिए भोजन बनाने लगी। उधर मंदिर में प्रभुसेवा में अनुरक्त कलयनार के सपने में शिवजी ने प्रकट होकर कहा - 'तुम भूखे हो। घर जाकर भूख मिटा लो।' शिवजी के कथनानुसार कलयनार अपने घर पहुँचा। घर की अपार संपत्ति देख उसने पत्नी से पूछा - 'यह संपत्ति कहाँ से आई है?' पत्नी ने कहा - 'शिवजी की कृपा से।' गुंगुलिय कलयनार प्रभु की कृपा का स्मरण कर उनकी सेवा में निमग्न रहा।

11. मानकंजार नायनार

कंजार नामक गाँव में मानकंजार नाम का एक भक्त रहता था। वेलाल जाति में जन्मा कंजार नायनार राजा की सेना का दलपति था। उसे शिवजी पर अचंचल विश्वास था। वह अपनी सारी संपदाओं को शिवभक्तों का मानकर, उनके माँगने से पूर्व ही उनके लिए आवश्यक चीजों को जुटाता था। शिवजी को वह अत्यंत निष्ठा के साथ पूजता था। शिवजी की कृपा से उसके घर में एक पुत्री का जन्म हुआ। लाड़ - प्यार में पलकर वह कुछ समय पश्चात् युवती बनीं। मानकंजार ने अपनी पुत्री को एयरकोन कलिक्कामर से विवाह करने का निश्चय किया।

कंजार गाँव शादी की तैयारियों से शोभायमान बन गया। एयरकोन नायनार और उसके रिश्तेदार मंगलमय वाद्यों के साथ मानकंजार की ओर निकल पड़े। उनके आने के पूर्व ही एक मुनिवर के भेस में शिवजी ने कंजार के घर में प्रवेश किया। कंजार ने अपनी पुत्री को बुलाकर

मुनिवर के चरण छूने को कहा। अपने चरणों को नमन करती वधू के सिर के बालों को मुनिवर ने देखा। उसने कंजार से पूछा - 'तुम्हारी पुत्री के सिर के बाल मेरी जनेऊ के काम आयेंगे।' यह सुनते ही कंजार ने अपनी पुत्री के बालों को मूल से काट दिया। उन्हें मुनिवर के हाथ में रखने के लिए आगे आने को था कि मुनिवर अदृश्य हो गया। उमा सहित वृषभ वाहन पर आरूढ होकर महादेव जी गगनतल पर प्रकट हुए और कहा 'हे भक्त! तेरी भक्ति को जगत - विख्यात करने के उद्देश्य से मैं ने ऐसा किया। यह कहकर शिवजी अदृश्य हो गए। शिवजी की कृपा से कंजार की पुत्री के बाल यथावत आ गए।

12. अरिवाट्टाय नायनार

चोल देश में कावेरी नदी जहाँ बहती है, वहाँ कण्णमंगलम् नाम का एक गाँव है। उस गाँव में तायनार नामक शिवभक्त रहता था। हर दिन लाल धान के चावल का अन्न, आम के आचार को वह शिवजी को समर्पित करता था।

भगवान महादेव एक बार तायनार की भक्ति को परखने का निश्चय किया। शिवजी के संकल्प मात्र से उसकी सारी संपदाएँ घट गयीं। दारिद्र्य से व्यथित होते हुए भी वह रोज की सेवा को नहीं भूला। मजदूर बनकर जो कमाता था, उससे प्राप्त पैसों से लाल चावल खरीदकर, उसे अच्छी तरह पकाकर नैवेद्य के रूप में समर्पित कर, स्वयं कम दाम के काले धान को खरीद कर अपना जीवन - यापन करता था।

एक बार तायनार ने लाल चावल का अन्न, आमचूर (आम के सूखे टुकड़े), लाल पत्तों की सब्जी बनाकर उन्हें टोकरी में रख, मिट्टी के बर्तन

में पंचगव्य (गाय का दूध, दही, घृत, मूत्र और गोबर) लेकर सपत्नी वह शिवालय के लिए निकल पड़ा। जाने के मार्ग में पैरों के लड़खड़ाने पर धड़ाक से वह गिर पड़ा। इससे टोकरी का अन्न, आमचूर, लाल पत्तों की सब्जी धरा पर बिखर गये। 'हाय भगवान! यह क्या हो गया! प्रभु के लिए नैवेद्य मैं ले जा रहा था, सब धरा पर गिर बिखर गये। अब मैं कैसे नैवेद्य लगाऊँ?' इस संताप से नायनार तलवार से अपने गले को काटने के लिए तैयार हुआ। तब सबके देखते समय शिवजी वृषभ पर बैठ आकाश पर प्रकट हुआ। 'हे भक्त - शिखामणि! तेरी अपूर्व भक्ति पर मैं रीझ उठा। मैं तुझे एक वर देता हूँ, जिससे तू सपत्नीक कैलाशवासी बने रहो।' यह कह प्रभु अदृश्य हुआ। तलवार (अरिवाल्) से कण्ठ को काटने को तैयार हुआ था। इस कारण यह अरिवाल नायनार के नाम से विख्यात हुआ। समय जैसे - जैसे बीतता गया उसका नाम अरिवाट्टाय नायनार में बदल गया।

13. आनाय नायनार

मेल मलनाडु नामक देश में तिरुमंगलम् नामक सुंदर गाँव है। उस गाँव में मानो यादव वंशोद्धार के लिए आनाय नायनार का अवतार हुआ - ऐसा प्रतीत होता है। पवित्र विभूति को धारण कर वह शिव को छोड़ किसी और को नमस्कार नहीं करता था। वह पशुओं को चराता था। मुल्लै प्रदेश के हरियाली से भरे मैदानों में वह उन्हें चराता था। पशुओं के लिए अलग-अलग झोंपड़ियों को बनाकर, उनमें पशुओं को सुरक्षित रखता था। उनकी देखभाल में भी वह जागरूक रहता था।

संगीत - कला में आनायर निष्णात था। बाँस में सुराख बनाकर, बाँसुरी बनाकर, उससे मधुर संगीत को बरसाता था।

एक बार शिवजी के पंचाक्षरी मंत्र को अपनी बाँसुरी बजाकर मधुररस बरसाया। उस रस से लोग तन्मय हो जाते थे। वह एक मधुर एवं अद्‌भुत संगीत था। जानवर भी इस संगीत को सुनकर उसे घेर लेते थे। दूध पीते बछड़े इस मधुर धुन को सुनकर दूध पीना भूल जाते थे। आनायर के संगीत को सुन चराचर जगत के लोग भी तन्मय होकर सर्वस्व भूल जाते थे।

कपट भक्ति से सदा दूर रहनेवाले भगवान महादेव ने एक दिन उसके संगीत को सुना। तुरन्त उमादेवी सहित वृषभवाहन पर चढ़कर आनायर के सामने प्रकट हुआ और कहा - 'हे भक्त! वेणुनाद करते इस हालत में ही तू हमारे यहाँ पहुँचो।' कहकर शिवजी ने आनायर पर अपनी करुणा दिखाई।

14. मूर्तिनायनार

पाण्ड्य देश की राजधानी मदुरै में वणिक वंश में मूर्तिनायनार अवतरित हुआ। भक्ति के ही स्वरूप में विलसित नायनार मदुरै के शिवमंदिर में प्रतिदिन शिवजी के लिए चंदन घिस कर दिया करता था।

एक बार कर्नाटक का नरेश पाण्ड्य देश पर आक्रमण कर, पाण्ड्य राजा को हराकर उस देश को अपने अधिकार में कर लिया। उसे विभूति धारण करने वाले शिवभक्तों से द्वेष था। यह द्वेष की भावना दिन-ब-दिन बढ़ती गई। उसने जैनमत को देश में फैलाने की ठान ली। मूर्ति नायनार ने जैनमत स्वीकार करने के लिए कई प्रकार से विचार किया। पर उसका संकल्प पूरा नहीं हुआ। मूर्तिनायनार की चंदन - सेवा को रोकने के लिए उसने सभी व्यापारियों को आदेश दिया कि कोई उसे चंदन की लकड़ी न दें। मूर्तिनायनार ने सोचा कि यह राजा मेरी सेवा में रुकावट डाल रहा

है। चंदन घिसते मेरे हाथों को वह कैसे रोकेगा। यह सोच मूर्तिनायनार ने अपने हाथों को चंदन घिसने के पत्थर पर रख घिसने लगा। इससे हाथ का चमड़ा उखड़ गया। रक्त बहने लगा। हड्डियाँ निकल आईं। रक्त बहने लगा। फिर भी नायनार रुका नहीं। उस रात मूर्तिनायनार के सपने में शिवजी प्रकट हुए और कहा - 'तेरा बुरा चाहनेवाला नरेश जल्दी ही मिट जायेगा। यह राज्य तेरे हाथ लगेगा। तू यथावत् मेरी सेवा करते हुए अंत में कैलाश में पहुँच जायेगा।'

उसी दिन रात को कर्नाटक नरेश चल बसा। मृत राजा की कोई संतान नहीं थी। समर्थ सक्षम राजा के बिना देश का नुकसान होगा। देश के सभी लोगों ने सोचा 'एक हाथी की आँखों पर पट्टी बाँधेंगे। फिर उसे छोड़ देंगे। वह जिसे ले आयेगा, वही इस देश का नरेश बनेगा।' उनका यह निर्णय था। निर्णय के अनुसार हाथी की आँखों पर पट्टी बाँध छोड़ दिया गया। हाथी राजमार्ग से बढ़ता हुआ वहाँ खड़े मूर्तिनायनार के गले में फूलमाला डाल दिया। राज्य के मंत्री और राज प्रमुखों ने मूर्तिनायनार को आमंत्रित कर बड़े ही वैभव के साथ उसे राजा बनाया। मूर्तिनायनार ने पावन पंचाक्षरी का जाप करता हुआ जीवन-यापन किया। उसने जनता को अपनी संतान मान कर शासन किया। अंत में शिवजी के तिरुचरणों के निकट पहुँच गया।

15. मुरुग नायनार

भरपूर दूध और लहलहाते खेतों से विराजते चोल देश में तिरुप्पुगलूर नामक एक गाँव है। इस गाँव में एक वैदिक परिवार में मुरुगनारु का जन्म हुआ। यह शिवभक्त था और एकाग्रचित्त से शिव की पूजा करता था।

तिरुप्पुगलूर में विलसित महादेवजी के लिए पावन फूलमालाओं को बनाकर देने की सेवा में मुरुग नायनार निष्ठा के साथ कार्य करता था। फूलमालाएँ बनाने की सेवा में निमग्न होकर भी सदा पंचाक्षरी मंत्र का जाप किया करता था। जगन्माता पार्वती देवी के पास से ज्ञान - क्षीर को पिया। तिरुज्ञान संबंधर इसके आप्त मित्र थे। शिवजी को फूलमालाएँ समर्पित करते - करते, उनकी सेवा में मन लगाकर काम करता हुआ मुरुग नायनार तिरुचरणों में पहुँच गया।

16. रुद्र पशुपति नायनार

तिरुत्तलैयूर नामक गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में पशुपति का जन्म हुआ। वह बचपन से ही शिवजी की भक्ति में लीन रहता था। रुद्रसूक्त को भक्ति तथा श्रद्धा से पठन करने के कारण यह रुद्र पशुपति के नाम से विख्यात हुआ।

रोज प्रातः काल ही उठकर आकण्ठ पानी में खडा होकर दोनों हाथों को सिर पर जोड़ भक्तिपूर्वक रुद्र सूक्त का पठन किया करता था। रुद्र पशुपति की भक्ति से प्रसन्न होकर शिवजी ने उसे शिवलोक में स्थान देकर उस पर अनुग्रह किया।

17. तिरुनालैपोवर नायनार (नंदनार का जीवन वृत्तांत)

कोल्लिडम् नदी - तट पर एक सुंदर गाँव है आदनूर। इस गाँव के बाहर के दलित वाडा में नंदनार का जन्म हुआ। जन्म से ही शिवजी के तिरुचरणों का सदा ध्यान करता रहता था। यह शिवालय के भेरी, मृदंग आदि वाद्यों के लिए आवश्यक चमड़ा; वीणा आदि वाद्यों के लिए तंत्र व नसों को ला देता था। इस प्रकार प्रभु - सेवा में लगा रहता नंदनार, मंदिर में ही दर्शन करता, गाता हुआ आनंदमय जीवन बिता रहा था।

आदनूर के निकट ही तिरुप्पुनगूर नामक गाँव में विलसे शिवजी के दर्शन की आकांक्षा से नंदनार ने वहाँ जाकर मंदिर के आगे खड़ा होकर देखा। लेकिन नंदीश्वर के कारण नंदनार को प्रभु के दर्शन नहीं हुए। प्रभु दर्शन से वंचित होने के कारण वह अतीव दुःख में डूब गया। भक्त की वेदना को पहचान कर करुणा सागर शिवजी ने नंदीश्वर को वहाँ से हट जाने के लिए इशारा किया। इससे नंदनार की इच्छा पूरी हुई। उसे सीधे प्रभु के दर्शन हुए।

एक बार नायनार ने चिदंबरम नटराज प्रभु का दर्शन करना चाहा। लेकिन 'पावन चिदंबरम के शिवालय में मुझ जैसा अपावन, निम्न कुल में जन्मा कैसे जा सकता है? क्या यह संभव है?' कहकर उसने अपनी इच्छा को रोक दिया।

एक दिन नंदनार चिदंबरम जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया। वह तुरन्त चल पड़ा। वह चिदंबरम की सीमाओं में पहुँच गया। लेकिन अपनी जाति के बारे में सोच चिदंबर नगर में प्रवेश न कर वहीं खड़ा हो गया। 'मेरी जाति ही मेरे मार्ग का अडचन बन गया है' - कहते हुए वह चिदंबरम के बाहर परिक्रमा - कर आया। इस प्रकार वह नगर के बाहर ही चिदंबरम की परिक्रमा करता रहा। एक दिन शिवजी उसके सपने में प्रकट हुए और कहा - 'हे भक्त! इस नीच कुल से मुक्त होने के लिए आग में चलकर तिल्लै के ब्राह्मणों से मिलकर मेरे आगे आ जा।' ब्राह्मणों ने अग्नि को प्रज्जवलित किया। नंदनार ने आनंदपूर्वक महादेव को नमस्कार कर, पावन पंचाक्षरी मंत्र का पठन करता हुआ अग्निकुण्ड से बाहर आया। उसकी काया निखरी, पावन यज्ञोपनीत लटक रहा था, मुनि वेष में ब्रह्मदेव - सा, नंदनार दिखाई दिया। तिल्लै के सारे ब्राह्मणों ने हाथ जोड़कर नंदनार को नमन किया। नंदनार ने धीरे - धीरे शिवालय

में प्रवेश किया। प्रभु नटराज के आगे आते - आते नंदनार अंतर्धान हो गया। शिवजी ने उसे सदा अपनी सन्निधि में रहने का अनुग्रह किया।

18. तिरुक्कुरिप्पु तोण्ड नायनार

कांची नगर के रजक कुल में जन्मा एक महान भक्त था। भगवान महादेव का वह परम भकत एवं शिवभक्तों की इच्छाओं को, बिना उनकी माँग से पूरा करता था। इसलिए उसे सब तिरुक्कुरिप्पु तोण्ड नायनार कहकर बुलाते थे। वह कांचीपुर के लोगों के मैले कपड़ों को धोकर ला देता था। प्रमुख रूप से शिवभक्तों के वस्त्रों को ठीक-ठाक धोकर श्रद्धापूर्वक उन्हें दे जाता था।

भगवान महादेव तिरुक्कुरिप्पु तोण्ड नायनार की भक्ति की परीक्षा लेना चाहता था। शीतकाल में एक दिन मैले कपड़े पहनकर गरीब शिवभक्त के भेस में उसके पास आया। उसके मैले कपड़ों को नायनार ने धोया और कहा - 'प्रभु! आपके कपड़े मैले पड़ गए हैं। यदि आप इन्हें देंगे तो धो लाऊँगा।' 'हे भक्त! सुन! इन वस्त्रों को सूर्यास्त से पूर्व साफ कर ला सकेगा तो दूँगा। रात में ठण्ड पड़ती है। इन वस्त्रों के बिना ठण्ड को बर्दाश्त नहीं कर सकता' - शिवभक्त ने ऐसा कहा।

नायनार उस माया तपस्वी को देख - 'प्रभु! आप उस वस्त्र को मुझे दीजिएगा। आज संध्या से पूर्व इसे साफ कर ले आऊँगा।' कह कर धोबी ने धोने के लिए उस वस्त्र को लिया। तालाब के जल से उसने उसे साफ किया। इस बीच दोपहर का समय बीत गया। भगवान की लीला ही समझिए अकस्मात् वर्षा होने लगी। वर्षा के थमने के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे। रात भी समीप आ गई थी। 'हाय! मैं ने क्या किया। मैं ने

शिवभक्त को कष्ट दिया। ये कपडे नहीं मिलेंगे तो वह ठण्ड को नहीं सह पायेगा। मैं अपने वचन से चूक गया। अब क्या करूँ। कुछ सूझता नहीं। इसी पत्थर पर मैंने इन कपड़ों को साफ किया था। इसी पत्थर पर मैं अपना सिर दे मारूँगा। यही मेरे दोष का प्रायश्चित्त होगा।' यों सोच कर उसने अपने सिर को उस पत्थर पर आघात पहुँचाने लगा। तब शिवजी के दयालु हाथ ने सिर को रोक दिया। 'मैंने तेरी भक्ति को जगत प्रसिद्ध करने के उद्देश्य से ऐसा किया, शांत हो जा।' शिवजी भक्तवत्सल थे। उन्होंने तिरुक्कुरिप्पु तोण्ड नायनार को शाश्वत रूप से शिवलोक प्रदान किया।

19. चण्डेश्वर नायनार

सेयंजलूर नामक गाँव में एच्च दत्तन और पवित्रा नामक दंपत्ति शैव संप्रदाय का अनुसरण करते हुए जीवन - यापन कर रहे थे। भगवान महादेव की कृपा से उनके घर एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम विचारशर्मा था।

शिवभक्त विचारशर्मा ने पशु - पालन को पवित्र कार्य माना। हाथ में एक लंबी लकड़ी लिए पशु को, उसी प्रदेश में ले जाता था जहाँ हरियाली होती है। हरा चारा के मिलने से पशु भी अधिक दूध देने लगे। गाँव के लोग भी उसके कार्य से संतुष्ट थे। घर में रहनेवाले, बछड़ों के वियोगी गाय भी विचारशर्मा के पास आते ही दूसरों से दूध दुहने की आवश्यकता के बिना अपने आप दूध दिया करती थीं। दूध का इस प्रकार धरती पर व्यर्थ बहाने की बजाय इस दूध से शिवजी का अभिषेक करना उचित माना।

शिवजी के लिए एक मंदिर के निर्माण की अभिलाषा से उसने मण्णि नदी - तट पर गूलर के पेड़ के नीचे रेत से एक शिवलिंग की स्थापना की। एक एक गाय के थनों को टो-टोकर समृद्ध दूध दिया। उस दूध को घड़ों में भर भरकर शिवजी का अभिषेक किया। प्रभु उस अभिषेक से संतुष्ट हुए। इसके बाद जानवर अपने आप आकर दूध देने लगे। पहले एक विनोद के रूप में प्रारंभ हुई यह पूजा नित्य-पूजा में बदल गई।

विचारशर्मा की इन पूजाओं को देख वास्तविकता से अपरिचित एक आदमी ने ग्राम के मुखिया के पास जाकर शिकायत की कि वह गायों के दूध को ले जाकर रेत में डाल रहा है। गाँव के वरिष्ठ नागरिकों ने विचारशर्मा के पिता को सुनवाई में भाग लेने को कहा। जो हो रहा है उसे अवगत कराया। एच्चदत्तन ने सभा को नमस्कार कर 'हे गाँव के वरिष्ठ जन! यह बात अब तक मैं नहीं जानता। इस दोष को क्षमा करें। इसके बाद ऐसा नहीं होगा। मैं आश्वासन देता हूँ।' ऐसा कहकर वह घर चला गया। रात भर उसकी नींद लगी। सभा में जो उसके पुत्र पर आरोप किया, उसके बारे में स्वयं जानने का निश्चय किया। इस आरोप में कितना सत्य है, कितना असत्य है, वह स्वयं जानना चाहता था। सबेरा होते ही यथा समय जानवरों को ले जाते हुए विचारशर्मा का गुप्त रूप से पीछा करने लगा। वह धीमे-धीमे मण्णि नदी तट पर पहुँच गया। वहाँ गूलर के नीचे रेत में शिवलिंग का निर्माण विचारशर्मा ने किया। पशु अपने आप चर रहे थे। फिर विचार शर्मा ने नदी में स्नान कर गूलर के नीचे रेत से लिंग का निर्माण किया। फिर वह गायों के दूध को निश्चित मात्रा में घड़ों में भर कर अभिषेक के कार्य का श्रीगणेश किया। अपने

पुत्र के कार्यक्रम उसने एकटक देखा। अमित क्रोध से अपने हाथ के डण्डे से विचारशर्मा के पीठ पर जोर से मारा। पर उसे मार की न अनुभूति हुई और न गलियाँ कानों में पड़ी। एच्चदत्तन अपने क्रोध को रोक नहीं सका। उसने शिवजी के लिए जो दूध के घड़े लाया था, उसे लात मार कर गिरा दिया। तब जाकर विचारशर्मा में चेतना की लहर दौड़ पड़ी। 'किसने अभिषेक के दूध को उंडेला?' इसे जानना चाहा। अभिषेक के दूध को जिसने भी नीचे गिराया है, वह जो भी हो उसके पैर मैं अवश्य काट दूँगा। उसके हाथ का डण्डा फरसा में परिवर्तित हुआ। उससे उसने अपने पिता के पैर काट दिये। एच्चदत्तन धरा पर गिर गया। शिवपूजा में जो विघ्न आया था, वह हट गया। इस कारण वह फिर अपनी पूजा में तल्लीन हो गया।

विचारशर्मा की अचंचल भक्ति से शिवजी परवश हुए। वे पार्वती समेत विचार शर्मा के आगे प्रकट हुए।

विचारशर्मा ने जैसे ही पार्वती समेत परमशिव को सादर नमन किया तब शिवजी ने कहा - 'हे भक्त! मेरे लिए तुमने अपने पिता के पैरों को भी काट दिया। अब मैं ही तेरा तात हूँ। मैं ने जिन आभूषणों को धारण किया, तू भी धारण कर शिवगणों का मुखिया बन चंडेश्वर बिरुद से विराजो।' इतना कहकर शिवजी ने विचारशर्मा को अपने बाहों में बाँध लिया। शिवजी के स्पर्श मात्र से विचारशर्मा का मायाशरीर हर गया और शिवजी की दिव्यज्योति में विलीन हो गया।

20. तिरुनाउक्करस नायनार

'तिरुवामूर नामक गाँव में पुगलनार, मादिनयार नामक एक आदर्श दम्पति थे। इन्हें तिलकवती नामक पुत्री और मरुल नीक्कियार नामक पुत्र थे। मरुल नीक्कियार ने बचपन में ही सकल विद्याओं का अभ्यास कर पंडितों की प्रशंसा प्राप्त की थी। जब तिलकवती बारह वर्ष की हुई तब एक शिवभक्त ने, जो राजा का दलपति था, जिसका नाम कलिप्पगैयार था, वह तिलकवती से विवाह करने को तैयार हो गया। पुलगनार भी इसके लिए तैयार हो गया। विवाह का मुहूर्त भी निश्चित किया गया। इतने में उत्तर दिशा के कुछेक राजाओं ने इस राज्य पर आक्रमण किया। कलिप्पगैयार उनका सामना करने के लिए सेना के साथ गया। इधर तिलकवती के माँ-बाप रोगग्रस्त होकर चल बसे। शत्रु सैनिकों से युद्ध करते हुए कलिप्पगैयार भी वीरगति को प्राप्त हुआ। अपार दुख सागर में डूबी तिलकवती 'मेरे माता-पिता ने मुझे कलिप्पगैयार के साथ विवाह करना चाहा। इस कारण कलिप्पगैयार की हो गयी। वे युद्ध में चल बसे। इस कारण मैं भी प्राणोत्सर्ग कर उनके पास चलूँगी।' ऐसा कहकर वह प्राणोत्सर्ग के लिए प्रस्तुत हो गई। तब उसके छोटे भाई मरुल नीक्कियार अपनी बहन के चरणों पर गिरकर 'मैं माता-पिता को खोकर तुम को ही सर्वस्व मानकर जी रहा हूँ। मुझे यों अनाथ बनाकर जाना कहाँ तक उचित है? मैं तुमसे पहले ही अपने प्राणों को त्याग दूँगा।' ऐसा कहने पर तिलकवती ने अपने प्राणोत्सर्ग कार्यक्रम को छोडकर अपने भाई को पुत्रवत् मानकर उसका पालन पोषण करने लगी।

मरुल नीक्कियार जैन मत से आकर्षित होकर जैन पाठशाला में दाखल हो गया। जैन मत से संबंधित उसने सभी ग्रंथों का भली-भाँति अध्ययन किया। इनकी प्रतिभा - पांडित्य से मुग्ध होकर जैन सन्यासियों ने उसका नाम 'धर्मसेन' रखा। बौद्ध भिक्षुओं से चर्चा कर वह जैन मत को ही सर्वोत्कृष्ट मत बताते हुए प्रचार करता था।

रिश्तेदारों को खोकर तिलकवती घर छोड़ तिरुक्केडिल नदी की उत्तर दिशा की ओर के वीरवट्टानम् नामक पवित्र शैवक्षेत्र में रहने लगी। वहाँ विराजमान शिवालय के सामने वाले भाग को साफ - सुथरा कर रंगोली सजाकर, सुगंधित पुष्पों की मालाएँ बनाकर शिवजी की सेवा में जुट गई। कभी कभार अपने छोटे भाई का स्मरण करती हुई व्यथित होती रहती थी। एक दिन शिवजी ने उसके सपने में आकर - 'तू चिन्तित नहीं होना। तेरे भाई ने कुछ समय तक मेरी तपस्या की थी। वह एक महाभक्त है। उसे मैं पुनःशिवभक्त में बदल दूँगा।' यों कह कर वह अंतर्धान हो गया।

वहाँ धर्मसेन शूलव्याधि का शिकार हुआ। इस व्याधि की पीड़ा को वह सह नहीं सका। जैन सन्यासियों ने व्याधि-निदान के लिए बहुत प्रयत्न किये पर वह कम नहीं हुआ। अंत में धर्मसेन को अपनी बहन तिलकवती की याद आई। जैन मत वेशधारण को छोड़ वह अपनी बहन के पास आया। घर आये अपने भाई को देख तिलकवती ने सान्त्वना दी कि भगवान शिवजी की कृपा से रोग से मुक्ति मिल जायेगी। यह कहकर उसने धर्मसेन को पंचाक्षरी मंत्र का उपदेश दिया। माथे पर विभूति लगा दी। परमपिता परमेश्वर की कृपा से मरुल नीक्कियार की व्याधि कम हो गयी। भगवान शिवजी मरुल नीक्कियार के द्वारा गाये गए गीतों से संतुष्ट हुए। 'आज से तुम तिरुनावुक्करसर (श्रीवागीश) नामक नाम से प्रसिद्ध हो जाओगे।' ऐसा कहकर शिवजी ने आकाशवाणी द्वारा आशीष दिया।

शिवभक्त तिरुनावुक्करसर तब से मनसा, वाचा, कर्मणा प्रभु की सेवा में निमग्न हुआ। सारे शरीर पर विभूति मल लेता था। रुद्राक्ष

मालाओं को धारण करता था। प्रभु को मन में बिठा रखता था। प्रभावशालीं तमिल में शिवस्तुति में गीतों की रचना करने लगा। शिवालय के चारों ओर झाड़ियाँ, घास, पत्थर-कंकर जो भी थे उन्हें साफ करने के काम में अपना समय लगा देता था।

तिरुप्पादिरि पुलियूर गाँव के जैन तिरुनावुक्करसु की चेष्टाओं को देख मन में कुढ़ने लगे। सभी मिलकर एक दिन वहाँ के राजा महेंद्रवर्मा, जो जैन मतावलंबी था, उनसे एक शिकायत - 'हे राजन्! धर्मसेन आपके द्वारा सम्मानित जैन धर्म की निन्दा कर रहा है।' पल्लव नरेश महेंद्रवर्मा यह सुन आपे से बाहर होकर कहा 'तिरुनावुक्करसु को बंदी बनाकर मेरे आगे उपस्थित करो।' इसके बाद राजा उसे जलते हुए चूने की भट्टी में डाल देता है। शिवजी की कृपा से तिरुनावुक्करसु का शरीर एक सप्ताह के बाद भी खराब नहीं हुआ। जैनों ने अपने क्रोध को न छोड़ उसे विषैला आहार खिलाया। शिवजी के भक्तों को भला विष क्या कर सकेगा? हाथियों से उन्होंने कुचल कर मारना चाहा। पर हाथियों ने तिरुनावुक्करसु को देखकर नमस्कार किया। कमर में पत्थर को बाँध कर जैनों ने उसे मारना चाहा। कृपालु शिवभक्त को सागर ने सुरक्षित रूप से तट पर ले आकर छोड़ दिया। 'भले ही कितने ही कष्ट आयें, मैं शिवजी का ध्यान करता ही रहूँगा।' दृढ़निश्चय कर उस भक्त ने अपनी राह को छोड़ा नहीं। जैन धर्म को असत्य से कलुषित मानकर नरेश महेंद्रवर्मा ने जैन धर्म का त्याग कर दिया। साथ ही नरेश शैव धर्म का अनुयायी बन गया। तिरुप्पदिरि पुलिचूर में जो जैन मंदिर थे, धर्मशालाएँ थीं, उन्हें राजा ने ढहवा दिया। तिरुवदिगै में शिवजी के लिए 'गुणपरईश्वरम्' नामक मंदिर का निर्माण करवाया। तिरुनावुक्करसु ने अनेक शिवालयों का दर्शन कर उन शिवधामों का गुणगान किया। तिरुनावुक्करसर का शीर्काली को

आने का समाचार ज्ञान संबंधर को विदित हुआ। उसने अपने शिष्यों से मिलकर उनका स्वागत किया। परस्पर नमस्कार के बाद, दोनों ने आलिंगन किया। फिर ज्ञान संबंधर ने 'अप्परे!' कह कर बुलाया। वहाँ उपस्थित शिवभक्तों ने इस मनोहर दृश्य को देख खुशी से ''हर हर'' कह कर जयनाद किया।

एक बार तिरुनावुक्करसु महाभक्त अप्पूदि अडिगल का गाँव तिंगलूर गया। तिरुनावुक्करसु को देखते ही अप्पूदि अडिगल आनंद से परवश हो गये। उसने महाभक्त के लिए भोज का प्रबंध किया। सारे भोज्य पदार्थों के तैयार होने के पश्चात् अप्पूदि अडिगल ने अपने पुत्र को बुलाकर केले के पत्तों को काट लाने को कहा। पत्ते काटते समय उसे एक साँप ने डँस दिया। उसकी परवाह ना करते हुए उस बालक केले के पत्तों को लाकर अपने पिता को दिया तथा देने के बाद प्राणों को छोड़ दिया। पुत्र के मरण समाचार प्रकट न होने देकर अप्पादि अड़िगल परोसने लगा। लेकिन इस बात का पता तिरुनावुक्करसर को लग गया। उसने बालक के शरीर को मंदिर के आगे लिटाने को कहा। तब उसने 'ओन्नु कोलाम्' से प्रारंभ होनेवाले भक्ति गीत का गान किया। इससे बालक जीवित हो उठा।

21. कुलच्चिरै नायनार

मण मेरकुड़ि नामक सुंदर गाँव में एक महान शिवभक्त कुलच्चिरै नायनार का जन्म हुआ। निरन्तर शिवभक्ति में लीन वह पाण्ड्य सम्राट का प्रधान मंत्री था।

शिवजी के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए शिवभक्तों की सेवा अनिवार्य है। यह जानकर शिवभक्तों के दिखाई पड़ने पर कुलच्चिरैयार

उनके चरणों को साष्टांग नमस्कार करता था। वे किसी भी जाति के हों, वे धनी हों या निर्धन - सबको समान माना करता था।

शिवभक्त समूह में आयें या अकेले आये, - उन्हें सानंद आमंत्रित कर, उन्हें अतिथि मानकर; संतुष्ट रखता था। पांड्य सम्राट के प्रधान मंत्री कुलच्चियार ने देश को शत्रुओं से सदा रक्षा की। शैवमत के विस्तार होने के कारक मंगयरक्करसि रानी के शैवभक्ति की सेवा के लिए सच्चा सेवक - सा शिवभक्तों का आदर प्रदान करता आया। तिरुज्ञान संबंदर तिरुचरणों को अपने सिर पर धारण करनेवाले महान व्यक्ति हैं। सुंदरमूर्ति नायनार से 'तिरुतोंड तोगै' नामक ग्रंथ में 'पेरुनंबी' के नाम से विख्यात् शिवभक्त हैं कुलच्चिरै नायनार।

22. कुरुंब नायनार

शिव दीक्षा में दिक्षित, विभूति से विराजमान शिवभक्त कुरुंब नायनार पेरुमिललै गाँव में अवतरित हुआ। शिवभक्तों की इच्छाओं को पूरा करते, भोजन आदि देकर उनको संतुष्ट रखता था। शिवभक्तों के आगे अपने को सेवक मान विनयपूर्वक आचरण करता था।

'तिरुतोंड तोगै' विरचित सुंदरमूर्ति नायनार का सदा ध्यान करते रहने के कारण कुरुंब नायनार ने अष्ट सिद्धियों को वश में कर लिया। शिवपंचाक्षरी को ही अपना सर्वस्व मान शिवभक्तों की सेवा में ही समय बिताते समय सुंदरमूर्ति नायनार कोडुंगोलूर पहुँच गया। वह तिरुवंजि कलम में विलसे परम शिव की स्तुति कर कैलास की ओर अग्रसर होने की बात को अपने योगबल से जान गया 'सुंदरमूर्ति नायनार से बिछुड़ कर मैं एक अंधे के समान जीवन बिता नहीं सकूँगा। इसलिए योगबल से अभी मैं कैलास चला जाऊँगा।' ऐसा कहकर कुंरुब नायनार ने

निश्चय कर लिया। अपनी योगशक्ति से ब्रह्मरंध्र को खोलकर शिवजी के तिरुचरणों की सन्निधि को प्राप्त कर लिया कुरुंब नायनार। सुंदरमूर्ति नायनार से पहले ही वह कैलाश पहुँच गया।

23. कारैक्काल अम्मैयार

सागर तट पर विराजमान कारैक्काल नामक एक सुंदर नगर में धनदत्त नामक एक वणिक (व्यापारी) श्रेष्ठ रहता था। बड़े इंतजार के बाद उसके घर में एक लड़की पैदा हुई। उसका नाम पुनिदवती रखकर, अत्यंत लाड़ - प्यार से धनदत्त ने उसे पाला-पोसा। पुनिदवती बचपन से शिवभक्तिन थी। सदा पंचाक्षरी मंत्र का पठन करती हुई वह शिवजी के ध्यान में लीन रहती थी। वह सुंदर पुनिदवती धीरे-धीरे युवती बन गई। कई लोग उसकी सुन्दरता पर आकर्षित होकर उससे विवाह करने को तैयार थे।

नागपट्टणम् में निधिपति नामक व्यापारी का परमदत्त नामक पुत्र था। परमदत्त तथा पुनिदवती से विवाह करने को कुछ प्रमुख लोगों ने धनदत्त की सम्मति चाही। इसके लिए धनदत्त तैयार हो गया। शहर के प्रमुख व्यक्तियों के आशीर्वाद से विवाह का कार्य वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। एक सुंदर भवन में परमदत्त तथा पुनिदवती दोनों ने खुशी-खुशी भरा जीवन बिताया। दोनों अपने घर आये भक्तों की खूब आवभगत करते थे। शिवभक्तों की तृप्ति को ही वे अपनी तृप्ति मानते थे।

एक बार किसी ने परमदत्त को दो आम के फल भेंट में दिये। उन्हें परमदत्त ने एक सेवक द्वारा घर भिजवाया, पुनिदवती ने उन आमों में से एक को शिवभक्त को दिया। शिव भक्त उसे सानंद खाकर, पुनिदवती को आशीर्वाद देकर चला गया।

परमदत्त भोजन के समय घर पर आ गया। स्नान आदि कार्यों के पश्चात् वह भोजन करने बैठा। पुनिदवती ने भोजन की थाली सामने रखी। उसमें पति का भेजा आम का फल भी था। वह उस आम के फल को बड़े चाव से खा रहा था। उसने कहा - 'मुझे दूसरे फल को भी खाने की इच्छा हो रही है। उसे भी ले आ।' दूसरे फल को पुनिदवती कहाँ से लायेगी। फल लाने को वह भीतर गई। उसने शिवजी से प्रार्थना की कि वह उसे इस विपदा से बचाए। शिवजी की कृपा से एक आम का फल उसे मिल गया। पुनिदवती ने उसे सहर्ष पति को दिया। उसके पति ने उसे खुशी-खुशी से खाया। 'यह आम का फल पहले आम से भी स्वादिष्ट है। यह पहले जो मैं ने फल खाया उससे यह बिलकुल भिन्न है। यह तुम्हें कहाँ से मिला?' कहकर पति ने पूछा। पुनिदवती शिव के अनुग्रह से फल मिलने की बात कहना चाहती थी। पर बताने में वह सकुचा गई। लेकिन पतिभक्ति के कारण उसने सच-सच बता दिया। पर परमदत्त ने इसे माना नहीं। 'परमेश्वर की कृपा से फल मिलने की बात कह रही हो। यदि यह सच है तो एक और फल मँगवाकर मुझे दो।' पति ने पत्नी को आज्ञा दी। पुनिदवती ने विवश होकर शिवजी से विनती की - 'हे नीलकण्ठ! अब एक और पका आम चाहिए। नहीं तो मेरी बात असत्य सिद्ध होगी।' शिवजी ने एक और फल प्रदान किया। उसने उसे पति को दिया। जैसे ही आम उसके पति के हाथ में पहुँचा वैसे ही वह अदृश्य हो गया। परमदत्त डर गया। 'यह साधारण मानवस्त्री नहीं है। यह एक देवी है। इसे छोड़ चला जाना होगा।' यह निश्चय कर वह किसी को बिना बताये किसी अन्य गाँव में वहाँ के एक व्यापारी की पुत्री से विवाह कर लिया।

यह बात उनके रिश्तेदारों को मालूम हुई। उन्होंने सोचा पुनिदवती को उसके पति के पास पहुँचाना ही उनका कर्तव्य है। उसे एक सुंदर

पालकी में बिठाकर, सभी मिलकर पाण्ड्य देश में परमदत्त के नगर पहुँचे। उस समाचार को सुन परमदत्त अपनी पत्नी और बेटी सहित पुनिदवती को देखने चल पड़ा। उसके चरणों पर गिर कर, नमस्कार कर 'मैं तुम्हारे अनुग्रह से जीवन - यापन कर रहा हूँ। मैं तुझे देवी मानता हूँ। इसीलिए में ने अपनी पुत्री को भी तेरा नाम दिया।' विनयपूर्वक कहा। यह देख रिश्तेदारों ने पूछा - 'तू अपनी पत्नी को क्यों नमस्कार कर रहा है? कारण क्या है?' इन बातों को सुनकर परमदत्त अपनी पत्नी को दिखाते हुए कहा - 'यह मानवी कदापि नहीं है। यह महिमान्विता देवी है। इसी कारण मैं ने अपनी बेटी का नाम पुनिदवती रखा। मेरे समान ही तुम सभी इन्हें नमस्कार करो।'

परमदत्त के वचन सुनकर रिश्तेदार चकित रह गए। पुनिदवती ने भी पति की बातें सुन शिवजी पर मन को लग्न कर कहा - 'हे ईश्वर! यह मुझे देवी मान रहा है। इनके लिए अपने सुंदर शरीर को, जो माँस का समूह है छोड़ना चाहती हूँ। तेरे तिरुचरणों को सदा सेवा करने के पिशाच रूप को मुझे प्रदान कर।' इसके बाद अपने शरीर के माँस-मज्जा, उससे प्राप्त सुन्दरता को पुनिदवती ने त्याग दिया। ठठरी को ही अपने शरीर सा पिशाच रूप को धारण किया। आकाश एवं धरा ने एक होकर पुष्पवृष्टि की। सारे रिश्तेदार इस अद्भुत को देखकर चकित रह गए।

जहाँ शिवजी विराजते हैं ऐसे कैलाश में पैरों के बल चलते जाना उचित न मानकर वह सिर के बल चलकर कैलाश गई। उसे देख शिवजी ने - ''माँ'' कहकर संबोधित किया। यह संबोधन चौदह भुवनों में गूँज उठा। तुरन्त उसने शिवजी को देखकर 'तात्' कहती हुई उनके पैरों पर गिर पड़ी। शिवजी ने पूछा 'तुझे कौन-सा वर चाहिए?' उसने कहा - 'मुझे

जन्म-मरण से मुक्त कर दो। यदि जन्मना ही पड़े तो मैं तुझे कभी न भूलूँ - ऐसा वर दो। इतना ही नहीं जब तुम नृत्य करोगे, तब तुम्हारे चरण तले रहूँ-ऐसा वर दो।' उसने विनीत स्वर में प्रार्थना की। महादेव ने उसे देखकर - 'जननी! दक्षिण दिशा में पलयनूर गाँव के तिरुवालंगाड मंदिर में मेरा प्रदर्शित नर्तन देखती, मेरा स्मरण करती रहोगी' - शिव ने ऐसा आशीष दिया।

24. अप्पूदि यड़िगल् नायनार

शिवजी का अत्यंत प्रिय भक्त है तिरुनावुक्करसर। उस तिरुनावुक्करसु नायनार को उसने कभी नहीं देखा। फिर भी उसके चरण-कमलों को ही अपने हृदय में स्थापित कर, उन्हीं के ध्यान में लीन रहा अप्पूदि यड़िगल् नामक शिवभक्त। शिवभक्तों की सुविधा के लिए अनेक मठ, धर्मशालाएँ, निर्मल शीतल-जल के प्याऊ बनाकर उसने उन्हें तिरुनावुक्करसु नायनार का नाम रखा।

एक बार तिरुनावुक्करसु नायनार शिवक्षेत्रों के दर्शन करते हुए तिंगलूर आया। तिरुनावुक्करसु ने शिवभक्तों की सुविधाओं के लिए निर्मित मठों एवं प्याऊओं को देखा। वहाँ के शीतल जल को पीकर वह सुंतष्ट हुआ। इतना ही नहीं उस प्याऊ के चारों ओर 'तिरुनावुक्करसु प्याऊ' नाम भी लिखा हुआ था। वहाँ के लोगों से उसने पूछा - 'इन प्याऊओं पर किसने यह नाम रखा?' इन पर तिरुनावुक्करसु का नाम रखनेवाले महाशय हैं अप्पूदि यडिगल्। उसका घर दूर नहीं है, पास ही है।' वहाँ के लोगों ने कहा।

तिरुनावुक्करसु नायनार अप्पूदि यडिगल् के घर के सामने जाकर खड़ा हो गया। अप्पूदि यडिगल् ने यह जान लिया कि आनेवाला उसके

आराधक तिरुनावुक्करसु हैं और खुश हुआ। उसने नायनार को अपनी सेवा से संतुष्ट कर, वहीं भोजन करने की प्रार्थना की। इस पर तिरुनावुक्करसु ने अपनी सम्मति दी। आये हुए अतिथि देवता को खिलाने अप्पूदि यडिगल् तथा उसकी पत्नी ने षटरसों से युक्त मिष्ठान्न को तैयार किया। भोजन परोसने से पूर्व अपने पुत्रों में से एक बड़े तिरुनावुक्करसु को बुलाकर बगीचे से केले के पतों को काट लाने को कहा। वह बालक अत्यंत खुशी से बाग में गया। केले के पत्तों को काटते समय एक साँप ने उसे काटा। इस बात का पता होने से आतिथ्य में रुकावट पड़ जायेगी, वह जल्दी-जल्दी डर के कारण घर पहुँचा और उसने पत्तों को दिया। इसके बाद जहर के फैलने से वह स्वर्ग सिधर गया। अप्पूदि यडिगल् तथा पत्नी समझ गये कि साँप के काटने से पुत्र की मृत्यु हुई। यदि यह बात अतिथि को मालूम होती तो भोजन में अड़चन बनेगी। इसलिए मृत बालक को निकट की चटाई में लपेट कर एक ओर छिपा दिया। इसके बाद दोनों ने जाकर अतिथि को भोजन के लिए आमंत्रित किया।

तिरुनावुक्करसु नायनार उनके आमंत्रण को स्वीकार कर अपने आसन पर बैठ गया। केले के पत्ते में पति-पत्नी ने सभी मिष्ठान्नों को एक-एक कर परोसा। तिरुनावुक्करसु ने नियमानुसार विभूति धारण कर अप्पूदि यड़िगल् को देते हुए - 'तुम्हारी संतान में बड़े को बुलाइये। उसे भी मुझे विभूति देना होगी।' तब अप्पूदि यड़िगल् ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। इस पर तिरुनावुक्करसु ने बालक के शव को दिखाने के लिए कहा। उसने भगवान नीलकण्ठ से प्रार्थना की कि बच्चे के शरीर से विष उतर जाये। नींद से उठने के समान बालक उठ खड़ा हुआ। बालक ने

तिरुनावक्करसु के चरणों में प्रणाम किया। उसने बालक को पवित्र विभूति दी। अपने पुत्र को जीवित देख माता-पिता खुशी से फूल गए।

अप्पूदि यडिगल् के गृह में कई दिन रहकर तिरुनावुक्करसु कई दिन बिताकर बाद में तिरुप्पलनम जाकर तमिल में 'तिरुप्पदिगल' रचते हुए जीवन-यापन किया। तिरुनावुक्करसु की कृपा से अप्पूदि यडिगल् महादेव के तिरुचरणों की सन्निधि में पहुँचने का भाग्य पाया।

25. तिरुनील नक्क नायनार

अनगिनत संपदा से विलसित चोल देश में तिरुच्चंदमंगै नामक एक सुंदर गाँव है। शिवभक्त के रूप में प्रख्यात नील नक्कर वहाँ जीवन-यापन कर रहा था। वह रोज शिवजी को पूजता, शिवभक्तों की सेवा करता इसे ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था।

एक बार नील नक्क नायनार अयवंदि के शिवमंदिर में विराजमान महादेव की सन्निधि में पूजा सामग्री लेकर सपत्नीक गया। भक्तिपूर्वक मंदिर की परिक्रमा कर शिवजी के गर्भगृह के निकट गया। उस समय एक मकड़ी शिवलिंग पर गिर पड़ा। पास ही खड़ा तिरुनील नक्क नायनार की पत्नी ने उसे देखा। एक माँ को अपने शिशु पर जितना प्यार होता है, शिवजी पर गिरी मकड़ी को देख उसे भी ऐसा ही प्यार था। मकडी के गिरने पर शिवजी को कोई खतरा हो सकता है, इस विचार के आते ही नील नक्क नायनार की पत्नी डर गई। तुरन्त उसने अपने मुँह से मकडी को फूँक दिया। मकड़ी दूर उड़कर गिर गई। साथ ही उसके मुँह से छींटे भी गिर पड़ीं। तिरुनील नक्क नायनार ने अपनी पत्नी के मुँह से छींटों को गिरते देख अत्यंत क्रोध से - 'हे बुद्धि हीना! शिव के

प्रति तूने अपराध किया। मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुझे छोड़ रहा हूँ', कहकर अपनी पत्नी को वहीं छोड़ वह अकेला घर चला गया।

उस रात को सपने में तिरुनील नक्क नायनार के आगे महादेव जी प्रकट होकर अपना शरीर दिखाकर उन्होंने कहा - 'हे भक्त! तेरी पत्नी ने मुझ पर अपार प्रेम से मकड़ी को उड़ाने के लिए फूँक मारा। यह सच है कि उसके मुँह से छींटे पड़ीं। पर जहाँ - जहाँ मकड़ी चल पड़ी वहाँ - वहाँ फफोले निर्मित हुए ये देखो', कहकर उसकी पत्नी के भक्ति भाव को समझाया। तिरुनक्क नायनार नींद से जागकर स्वप्न वृत्तान्त को याद कर किया। उसने अपनी पत्नी की भक्ति का स्मरण कर संतुष्ट हो परमेश्वर की स्तुति की। सूर्योदय होते ही वह मंदिर जाकर, परमशिव के चरण-कमलों को छूकर साष्टांग नमन किया। उसने गलती के लिए क्षमा माँग संतोष के साथ पत्नी को घर ले आया।

शिवभक्तों की सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य मानकर नील नक्क नायनार अंत में शिवजी में लीन हो गया।

26. नमिनंदि अडगलु नायनार

प्रख्यात शैवधाम तिरुवारूर के निकट हरे भरे खेतों, दूध देते जानवरों से युक्त लहलहाते एमप्पेरूर नाम का एक मनोहर गाँव है।

उस गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में नमिनंदि नामक शिवभक्त का जन्म हुआ। नमि नंदि रोज तिरुवारूर जाकर वहाँ विराजमान वल्मीक नाथ के दर्शन कर, भक्ति सहित पूजा कर तत्पश्चात् वहाँ से थोड़ी दूरी पर स्थित अरनेरि नामक गाँव के शिव मंदिर में जाता था। उसके हृदय

में उस मंदिर में असंख्य दीप जलाने की एक प्रबल इच्छा थी। वह सूर्यास्तमय का समय था। इस कारण घी लाकर दीप जलाने का अवसर नहीं था। इस कारण वह तिरुवारूर के एक घर जाकर शिवालय में दीप प्रज्जवलन के लिए घी के लिए पूछा। उस घर का मालिक जैन मतावलंबी था। उसने कहा - 'हाथ में अग्निहोत्र को धारण करनेवाले शिव को दीप क्यों? यदि तुम दीप ही जलाना चाहते हो तो पानी डालकर दीप जलाओ', कहकर परिहास किया।

शिवजी पर अपार भक्ति-प्रपत्ति रखनेवाला नमिनंदि, चिंताक्रांत होकर तिरुवारूर मंदिर गया। उसने शिवजी को साष्टांग प्रणाम किया। मन उसका व्यथित हुआ। दीप जलाने में वह असमर्थ था। उस समय उसे अशरीरवाणी सुनाई दी - 'हे भक्त! तेरे हृदय में व्याप्त शोक को दूर कर लो। इस मंदिर के पास एक सरोवर है। वहाँ जाकर उसके पानी से दीप जलाओ।' ये वचन उसे सुनाई पड़े। नमिनंदि अत्यंत उत्साह से व्यग्र हो उठा। बाद में दौड़ता जाकर सरोवर से पानी लाकर उससे दीप जलाया। दीप प्रकाश फैलाने लगे। उसकी खुशी का ठिकाना न था। उसने खुशी से सारे मंदिर में दीपोत्सव मनाया।

दीप जलाने के लिए एक जैन से उसने घी माँगी। उसने उसका परिहास किया। शिवजी का भी मजाक उड़ाया था। उनकी अकल ठिकाने लाने के लिए उसने पानी से दीप जलाकर ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

परमभक्त तिरुनावुक्करसु से प्रशंसा पाकर नमिनंदि, जीवन भर महादेव के चरण-कमलों का ध्यान करते मृत्यु के बाद शिवलोक को प्राप्त किया।

27. तिरुज्ञान संबंध नायनार

भारतवर्ष का एक प्रख्यात शैवधाम है शीर्गाली। उस गाँव में शिवपाद हृदय और भगवती नामक वैदिक दम्पति शैवाचार, नियम निष्ठा के साथ अपने गृहस्थ जीवन को सानन्द बिता रहे थे। उस पुण्य दंपत्ति के घर तिरुवादिरै (आरुद्रा नक्षत्र) में एक पावन दिन को एक पुत्र का जन्म हुआ। ज्ञान शिशु के अवतरित होने की खुशी में देवताओं के पुष्पों की वर्षा कर दी। बालचंद्र के समान दिन-दिन बढ़ता उस बालक का पालन-पोषण उसके माता-पिता लाड-प्यार से कर रहे थे।

एक दिन शिवपाद हृदय स्नान करने के लिए जा ही रहा था कि उसका पुत्र भी उसके साथ चलने का हठ किया। हाथ-पैर चलाता वह रोने भी लगा। शिवपाद हृदय ने उसे उठाकर सरोवर के निकट जाकर बच्चे को तट पर छोड़, नहाने के लिए सरोवर में उतर कर डुबकी लगाया। जब पिताजी दिखाई नहीं दिये, तो बालक रोता हुआ चारों ओर देखने लगा। शीर्गाली पुण्यधाम में विराजे महादेव जी शिवगामी सुंदरी सहित रोते बालक के आगे प्रकट हुए। उमादेवी ने शिशु को चुप कराने के लिए अपने दूध को एक स्वर्ण-पात्र में भर कर, उसमें शिवज्ञान मिलाकर बालक को पिलाया। उमादेवी ने तुरन्त ही उस बालक को शिवतत्व का संपूर्ण ज्ञान दिया और वह बालक कहने लगा कि सकल चराचर सृष्टि के कारक महादेव जी ही हैं, सर्वस्व शिवमय ही है।

शिवपाद हृदय सरोवर से बाहर आकर दूध रिसते मुँह से खड़े पुत्र को देखा। उसे क्रोध आया। बालक को देखकर पूछा - 'किसके दिये जूठे दूध को पिये हो?' तब वह बालक आँखों में आँसू भर मंदिर के शिखर को दिखाया। बालक ने संकेत से बताया कि मुझे दूध पार्वती - परमेश्वर

जी ने पिलाया है। ज्ञान संबंधर ने अपने पिता के साथ अपने दर्शन-प्रदाता शिवजी के मंदिर में प्रवेश कर मधुर तमिल में पार्वती-परमेश्वर की स्तुति की (तोडुडैय सेवियिन् विडैयेरि ओर तूवेण्मदि चूडि)। वहाँ के सभी उपस्थित लोगों को ज्ञात हुआ कि तिरुज्ञान संबंधर को शिवजी के दर्शन हुए। इस प्रकार शिवजी उसके रक्षक बन गए। उस 'रक्षकयुक्त बालक' (आलुडै पिल्लैयार) के नाम से प्रख्यात् हो गया।

तिरुज्ञान संबंधर महिमा मंडित तिरुनीलकण्ठ यालप्पाणर नामक शिवभक्त है। उसकी पत्नी मतंग चूडामणि विन्नार है। संबंधर के दर्शन की आकांक्षा से उन्होंने शीर्गाली आकर संबंधर के चरण-कमलों को भक्तिपूर्वक नमन किया। उस दम्पत्ति को संबंधर शिवालय ले गया। पति-पत्नी ने खुशी-खुशी शिवजी के दर्शन कर, भक्ति परवश हो शिवजी को नमस्कार किया। संबंधर ने उन्हें देखकर अपनी इच्छा यों प्रकट की - 'तुम याल् वाद्य को बजाते हुए, गाते हुए, शिवजी की आराधना करते यहीं रहो।' यालप्पाणर ने भी अपनी सम्मति दी। तब से तिरुज्ञान संबंधर रचित पद्य-दशकों को यालप्पाणर, अपने याल् वाद्य को बजा, गाकर भक्तों को आकृष्ट किया।

एक बार तिरुज्ञान संबंधर का शिष्य-समूह उनके साथ आने पर वह तीर्थ यात्राओं के लिए निकल पड़ा। वे शिवालयों का दर्शन करते कावेरी नदी की उत्तर दिशा में विराजे तिरुपाच्चिलाश्रम पहुँचे। उस नगर के राजा कोल्लिमलवन की पुत्री मूर्छा के रोग से बहुत समय से पीड़ित थी। वहाँ के वैद्यों ने बहुत कोशिश की! रोग सुधरा नहीं। तिरु संबंधर के अपने नगर में आने की बात सुन कोल्लिमलवन ने उनके दर्शन कर अपनी पुत्री को रोग-मुक्त बनाने की प्रार्थना की। संबंधर ने 'तुनिवलर तिंगल......'

नामक पद्य दशक से शिवजी की स्तुति की। उसके बाद राजकुमारी रोग - मुक्त हो गई। इस अद्‍भुत दृश्य को देखकर उपस्थित सभी ने संबंधर की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

उन दिनों में पाण्ड्य राज्य भर में जैनों ने शिवालयों को जैन मठों में बदलकर, जनता को बलपूर्वक जैन मत में सम्मिलित कर लिया। पाण्ड्यराज की पटरानी मंगयरक्करसी, प्रधानमंत्री कुलच्चिरैयार शैवमतावलंबी बन गुप्त रूप से महादेव की आराधना किया करते थे। शैवमत की उन्नति के लिए अवतरित तिरुज्ञान संबंधर ने निकटवर्ती तिरुमरैकाट्टिल् नामक पावन शैवधाम में रहने की बात सुनकर, उन्होंने संबंधर को पाण्ड्य देश में आने, जैन मत का नामो निशान मिटाकर शैवधर्म का उद्धार करने के लिए अपने विश्वसनीय सेवकों को संबंधर के पास भेजा। उनकी इच्छा को स्वीकारते हुए अपने शिष्य परिवार से मोतियों की पालकी पर आरूढ़ हो पाण्ड्यों की राजधानी मदुरै नगर पहुँचे। आकाश को छूते शिखरों से, ध्वज पताकाओं से विराजे सुंदरेश्वर मंदिर जाकर प्रभु सन्निधि में साष्टांग नमस्कार किया। संबंधर के नगर में प्रवेश करते ही असंख्य जैनों ने अपशकुन देखे। सब पाण्ड्य राजा के पास जाकर - 'महाराज! अपने धर्म को नाश करने के लिए शीर्गाली से एक शैव आया है। उसे आप नगर से बहिष्कार कर दीजिए।' यह कहकर उन्होंने संबंधर जिस मठ में ठहरे हुए थे, उस शैव मठ में आग लगा दी। शिवजी की कृपा से मठ में फैली लपटें तुरन्त रुक गईं। तिरुज्ञान संबंधर ने अपने भक्तों के कष्टों का स्मरण कर 'पैयवे सेन्रु पाण्डयर कागवे.....' नामक पद्य शतक को गाकर 'शैवों के मठ में लगी आग राजा को रोग रूप में कष्ट दें' - ऐसी उसने आज्ञा दी। तुरन्त राजा उष्णज्वर का शिकार हुआ। वैद्यों ने बहुत कोशिश की, पर ज्वर उतरा नहीं। तब पटरानी

मंगयर करसी पति के निकट जाकर प्रार्थना की - 'संबंधर के अनुग्रह से शायद आप रोग मुक्त हो जायेंगे।' राजा ने रानी की बातों को माना। उन्होंने तिरुज्ञान संबंधर को सादर अंतःपुर में ले आने की आज्ञा दी। तिरुज्ञान संबंधर के दर्शन मात्र से राजा की पीड़ा किंचित कम हुई।

संबंधर को देखते ही वहाँ उपस्थित जैनों ने एक साथ खड़े होकर शास्त्र चर्चा के लिये चुनौती दी। यह सोच रानी भयभीत हुई कि कहीं बालक तिरुज्ञान संबंधर का जैन अहित न कर दें। पाण्ड्य राजा ने संबंधर तथा जैनों को देखकर घोषणा की - 'तुम में जो मेरे रोग का निदान करोगे, वे ही विजेता माने जायेंगे।' जैनों ने राजा के शरीर के बायी ओर के भाग के उष्णज्वर को उतारने के लिए मंत्रों का पठन करते हुए मयूरपंख से टटोला, इससे राजा की पीड़ा न घट कर और बढ़ गई। पीड़ा से व्यथित राजा ने संबंधर की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा। तुरन्त तिरुज्ञान संबंधर ने इस रोग की दवा और मंत्र विभूति को ही बताकर 'मंतिरमावदु नीरु, वानवर मेनदु नीरु' नामक पद्य दशक का आलाप कर राजा के शरीर के दायें भाग पर विभूति को लगाया। इससे उष्णज्वर पूरी तरह कम होकर भरे तालाब-सा ठण्डा पड़ गया। जैनों ने जिस प्रदेश पर मयूरपंख से टटोला वह स्थान उष्णज्वर से पहले से अधिक पीड़ित हुआ। राजा चकित रह गया। उसने जैनों से 'तुम हार गये। अब मेरे आगे मत ठहरो!' यह आदेश देकर संबंधर से 'महाशय! मेरे इस रोग को समूल मिटा दीजिए', ऐसा कहकर राजा ने प्रार्थना की। संबंधर ने तुरन्त उस भाग पर विभूति लगा दी। इसके लगाने पर उष्णज्वर पूरी तरह अदृश्य हो गया।

तिरुज्ञान संबंधर ने जैनों को बुलाकर पूछा कि 'तुम्हारे धर्म के प्रमुख अंशों के बारे में बताइये। इसे सुनकर जैनों ने 'हमारे धर्म के मुख्य

अंशों के बारे में मुँह से बताने में, चर्चा करने में कोई लाभ नहीं है। हम अपने धार्मिक सिद्धान्तों को तथा तुम अपने सिद्धान्तों को ताड़ पत्रों पर लिखकर जलती आग में डाल देंगे। जिनके ताड़-पत्र जलेंगे नहीं, वे ही विजयी होंगे। उनका धर्म जीता मानेंगे', ऐसी बात आवेग में कहा। संबंधर ने उनकी बातों को मान लिया। राजा के आदेश के अनुसार अग्नि को जलाया गया। संबंधर ने तेवार के 'तलिरिल वलरोलि' के पद्य दशक को भक्ति पूर्वक गाकर, शिवजी को मन में बिठाकर अपने हाथ का तिरुनाळ्ळार के ताड़-पत्र को अग्नि-कुण्ड में डाल दिया। वे ताड़-पत्र नहीं जले। वे जैसे के तैसे काँति सहित रह गये। जैनों ने ताड-पत्रों में लिखे अपने धार्मिक ग्रंथ के एक ताड़-पत्र को निकालकर अग्नि के हवाले किया। वह आग के लगते ही जलकर राख हो गया। यह देख वहाँ उपस्थित पांड्य राजा सहित अगणित लोग भी चकित रह गए। तिरुज्ञान संबंधर ने यह सिद्ध किया कि शिव को छोड़कर अन्य कोई देवता नहीं है। इससे राज्यभर में शैव धर्म फैल गया।

शिवहृदय ने माना कि अपना पुत्र तिरुज्ञान संबंधर शादी के योग्य बना है। तिरु पेरु मण नल्लूर के नंबांडर नंबि की पुत्री को सभी ने उसके योग्य स्वीकार किया। विवाह का मुहूर्त भी निकलवाया। अपने सभी बंधुओं, शिष्यों, परिवारों के साथ संबंधर तिरु पेरु मण नल्लूर के लिए चल पड़ा। संबंधर वर के भेस में अति सुंदर लग रहा था। वर-वधू के हाथों में कंकण शोभायमान थे। तिरुनील नक्कनायनार पुरोहित बन विवाह-कार्यों को संपन्न करने में प्रसन्न मन से तत्पर थे। वर-वधू ने पवित्र आग की परिक्रमा की। तब संबंधर ने - 'हाय! मुझे गृहस्थ जीवन ने आ घेरा। वधू के साथ मैं परम शिवजी के चरण-कमलों में पहुँच जाऊँगा', इस प्रकार उसने मन में स्मरण किया। तब महादेव जी ने प्रकट

होकर कहा - 'तुम अपनी पत्नी सहित, इस विवाह में जितनों ने भाग लिया, वे सभी मेरी करुणा नामक महाज्योति में लीन होंगे।' इस प्रकार उन पर प्रभु ने अनुग्रह किया। इस प्रकार सभी उस महाज्योति के अंग बन गये।

28. एयर्कोन् कलिक्काम नायनार

कलिक्काम नायनार 'एयर्' नामक कर्षक वंश का शिव भक्त है। संपत्ति से भरपूर चोल के तिरुप्पेरु मंगल में सदा शिव-ध्यान में तत्पर होकर वह जीवन - यापन कर रहा था। कलिक्काम नायनार का समकालीन था सुंदरमूर्ति नायनार।

भगवान महादेव ने सुंदरमूर्ति के लिए दूत कार्य भी किया - इस बात को सुनकर कलिक्काम नायनार को सुंदरमूर्ति पर क्रोध आया। भगवान महादेव की लीला-विशेषताओं को कलिक्काम नायनार समझ नहीं पाया। कलिक्काम नायनार की मिथ्या कल्पना को दूर करने के लिए शिवजी ने एक लीला-नाटक रचा।

शिवजी की लीला-विलास के कारण कलिक्काम एक घोर उदर-पीड़ा से तड़पने लगा। लाख कोशिश के बावजूर पीड़ा कम नहीं हुई। इस असहनीय पीड़ा के शमन के लिए कलिक्काम ने शिवजी की प्रार्थना की। शिवजी ने प्रकट होकर कहा - 'वत्स! तुझे कष्ट देनेवाला यह शूल रोग को मेरा भक्त सुन्दर ही दूर कर सकेगा।' कलिक्काम ने शिवजी से कहा - हे 'भगवान! हम वंश परंपरा के रूप में तुम्हारी सेवा करते आ रहे हैं। क्या तुम्हारा भक्त सुंदर इसे क्या दूर कर सकेगा? उसके व्दारा इस रोग से मुक्त होने के बदले मरना अच्छा है।' अत्यंत दृढ़ता पूर्ण अपने निर्णय को कलिक्काम ने बताया। शिवजी वहाँ से सुंदर के पास पहुँचे और कहा

- 'मेरा भक्त कलिक्कामर शूल रोग से पीडित है। तू जाकर उसका रोग दूर कर।' सुन्दर सानन्द कलिक्काम के पास निकल पड़ा। इधर कलिक्काम नायनार अपने रोग का निवारण सुंदर से होगा, यह जानकर और व्याथित होने लगा। 'क्या परमेश्वर शिवजी से सेवा लेनेवाला मेरा रोग-निवारण के लिए आ रहा है?' यह सोचता हुआ व्यथित होने लगा। अपने - आप वह ऐसा सोचने लगा - 'उसके आने से पूर्व ही मैं अपने उदर को चीर दूँगा। इससे मेरा रोग भी दूर होगा।' ऐसा सोचकर उसने अपने पेट को चीर दिया। इससे रोग के साथ उसके प्राण भी निकल गए। सुंदर ने इसे देखकर - 'अरे! यह कैसी विपत्ति आ पड़ी है। मैं भी कलिक्काम के समान अपने प्राणों को छोड़ दूँगा।' उसने वहाँ पड़ी हुई तलवार से उदर चीरना चाहा। शिवजी की कृपा से कलिक्काम उठ खड़ा हुआ। सुंदर ने कलिक्काम के चरणों पर भक्तिपूर्वक गिर पड़ा, कलिक्काम भी सुंदर के चरणों पर गिर पड़ा। कलिक्काम ने जीवन भर भक्ति पूर्वक शान्त जीवन बिताया। अंत में शिव-सन्निधि में चला गया।

29. तिरुमूल नायनार

कैलाश में नंदीश्वर के पास उपदेश लेनेवाला सुंदर नामक महाभक्त रहता था। भगवान नंदी से 'नाथर' कहकर बुलवाने वाले व्यक्ति जो तिरुमूलर के नाम से जगत विख्यात शिवभक्त है। अणिमादि अष्ट सिद्धियों को पानेवाले योगी श्रेष्ठ थे तिरुमूलर।

पोदिगै पर्वत को आवास बनाकर रहनेवाले अगस्त्य महर्षि से मिलकर रहने की अभिलाषा से तिरुमूलर पोदिगैमलै की ओर चल पड़ा। चिदंबरम आदि शिवमंदिरों के दर्शन करता हुआ कावेरी नदी के तट पर पहुँच गया। वहाँ उसने एक स्थान पर सारे जानवरों को चारे को खाने

की बजाय, इकट्ठे होकर आँसू बहाते हुए देखा। 'इसका कारण क्या हो सकता है?' वह सोचने लगा।

सात्तनूर नामक गाँव में एक ग्वाला रहता था। उसका नाम था मूलन। वह जानवरों को चराता था। वह उन्हें प्राण से भी अधिक प्यारा मानता था। एक दिन वह साँप के डसने से मर गया। इसलिए पशु सारे उसके दोनों ओर खड़े होकर आँसू बहा रहे थे। इस दृश्य को देखकर तिरुमूलर का हृदय पिघल गया। तुरन्त उसने सोचा कि 'शिवजी का अनुग्रह प्राप्तकर इन पशुओं के दुःख को मैं दूर करुँगा। इसके पुनर्जीत होने पर ही इन जानवरों का दुःख दूर होगा।'

शाम होते ही जानवर अपने बछड़ों का स्मरण कर घर की ओर चल पड़े। तिरुमूलर भी उनका पीछा करता गया। मूलन की पत्नी पति की प्रतीक्षा करते हुए, उसे दूँढ़ती हुई पशुओं के पीछे आते अपने पति को देखा। उसकी हालत को देख वह चिन्ता में पड़ गई कि 'कहीं उसे कोई हानि तो नहीं हुई?' उसे पकड़कर वह बलात अपने घर ले गई। वह योगासन में बैठा रहा। अपने पति के बारे में उसने गाँववालों को बताया। गाँव वालों ने तिरुमूलर की विचित्र स्थिति को देखकर ऐसा कहा - 'यह न पागल पन है और न नशा। अब उसे जगत से कोई मोह नहीं रह गया। यह शिवयोग में तल्लीन है। संसार के सारे बंधनों से मुक्त ज्ञानी लगते हैं।' मूलन की पत्नी ऐसा रो रही थीं कि उसे हिचकियाँ आने लगीं। सबने उसे सांत्वना दी। बाद में सभी चले गये।

तिरुमूलर भगवत् ध्यान करता हुआ तिरुवावकुतुरै पावन धाम को पहुँचकर उसने प्रभु दर्शन कर लिया। मंदिर के अश्वत्थ वृक्ष के तले बैठकर उसने योग निष्ठा में समय बिताया। वर्ष में एक पद्य के हिसाब

से तीन हजार वर्षों पर तीन हजार पद्यों की रचना की। यह 'तिरुमंत्र' के नाम से प्रख्यात हुआ। अपने मन में सदा शिवजी का ध्यान करता हुआ, अंत में तिरुमूलर शिवजी में लीन हो गया।

30. दंडि यड़िगल नायनार

प्रख्यात तिरुवारूर के पावन धाम में दंण्डि यड़िगल अवतरित हुआ। जन्म से वह अंधा होने पर भी ज्ञान दृष्टि रखनेवाला, भगवान के दर्शन कर संतुष्ट रहता था।

मंदिर के पश्चिम भाग में 'कमलालय' नामक एक सरोवर था। उसके चारों ओर जैनों ने अपना निवास बनाकर, सरोवर को पाट रहे थे। यह बात दंण्डि यड़िगल ने औरों से सुना। 'कमलालय' सरोवर को पहले जैसा विशाल बनाना चाहा।

दंडि यड़िगल् की आँखें नहीं थीं, इस कारण सरोवर के ऊपरी भाग में एक खंभे को गढ़वाया। सरोवर में भी एक खंभा गढ़वाया। दोनों खंभों को एक बलिष्ट रस्सी से कसकर बंधवाया। उस रस्सी को पकड़ दंडि यड़िगल सरोवर में मिट्टी को खोद निकालता था। रस्सी का सहारा लेकर खोदी मिट्टी को बाहर ले जाकर डाल देता था। दंडि यड़िगल के इस काम को देख जैन सह न सका, कई रुकावटों को पैदा किया - 'तुम आँखों के अंधे ही नहीं, हमारी बातें नहीं सुनते हो, ऐसा लगता है कि तुम बहरे भी हो।' जैनों ने उसका परिहास किया। उन बातों को सुन दंडि यड़िगल ने कहा - 'मैं भगवान शिवजी के तिरुचरणों को छोड़ और किसी को देखूँगा नहीं। 'अंधे होकर तुम सभी को मुझे देखने की दृष्टि मिली तो तुम क्या करोगे?' उनसे प्रश्न किया। यह सुन जैनों ने कहा 'यदि तुम्हारे

भगवान के अनुग्रह से तुझे दृष्टि मिली तो, हम सब यह गाँव छोड़ चले जायेंगे।' उन्होंने यह कहकर उसके हाथ के फावड़े को छीन लिया।

इससे दंडि यड़िगल तीव्र शोक-सागर में डूब गया। वह मंदिर जाकर - 'हे प्रभु। जैनों ने मेरा अपमान किया। इससे मैं तीव्र वेदना का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे इस वेदना से मुक्त करो' ऐसी प्रार्थना की। वह रात भर सोया नहीं। सबेरे - सबेरे उसे स्वप्न में शिवजी प्रकट हुए और कहा - 'हे तात्! दुःखी मत होना। तेरी आँखों को देखने की शक्ति मिलेगी। जैन नष्ट होंगे तू डर मत', ऐसा धीरज दिया। उसी समय उस देश के राजा के सपने में प्रकट होकर - 'दंडि यड़िगल हमारे लिए सरोवर खोद रहा है। उसके काम में जैन अड़चन डाल रहे हैं। तू जा और दंडि यड़िगल की इच्छा की पूर्ति कर।' ऐसी आज्ञा देकर अदृश्य हो गए।

सूर्योदय होते ही राजा दंडि यड़िगल के पास गया। सारा वृत्तांत जान गया। राजा ने जैनों को बुलाकर कहा - 'यदि दंडि यड़िगल देखने की शक्ति पा लेगा तो, तुमने गाँव छोड़ जाने की बात की थी, क्या यह सच है?', जैनों ने कहा 'हाँ'। दंडि यड़िगल, राजा और जैन सभी मिलकर सरोवर के पास गए। राजा ने दंडि यड़िगल को देखकर कहा - 'हे महान भक्तवर! भगवान के अनुग्रह से तुम्हारी आँखों को, देखने की शक्ति मिले। हम सब यह दृश्य देखना चाहते हैं। हमें भी वह अद्भुत दृश्य दिखा दो' ऐसी प्रार्थना की। तब दंडि यड़िगल ने हाथ जोड़कर भक्ति पूर्वक कहा 'यदि मैं महादेव का सच्चा भक्त हूँ तो मेरी आँखों को देखने की शक्ति मिले। जैन देखने की शक्ति खो दी। 'सच्चा धर्म शैव ही है' कहकर पंचाक्षरी मंत्र को जपते हुए कमलालय में उसने डुबकी लगाई।

क्या चमत्कार! कमल जैसे विशाल आँखों से शोभायमान हो दंडि यड़िगल सरोवर से ऊपर आया। जैनों ने अपनी दृष्टि को टो-टोकर चलने लगे। राजा ने इसे देखकर कहा - 'बुरा करने की नीयत रखनेवाला जैन मान नष्ट - भ्रष्ट हो गया। इन्हें मेरी आँखों से दूर भगा दो।' राजा ने आज्ञा दी। इतना ही नहीं उनके घर, मठ गिरवाकर 'कमलालय' का विस्तार करवाया। दंडि यड़िगल की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह पंचाक्षरी जापते, शिवजी की सेवा करते अंत में उनके चरणों में पहुँच गया।

31. मूर्ख नायनार

सभी संपदाओं का निलय तिरुवेर्काड नामक गाँव में मूर्ख नायनार का जन्म हुआ। वह एक महान शिवभक्त था। पहले वह शिवभक्तों को भोजन कराकर, उनके मुख पर विराजमन तृप्ति को देखकर, उसके बाद स्वयं भोजन करता था। यह उसके जीवन का नियम था। शिवभक्त जो भी माँगते थे, वह नकारता नहीं था। मूर्ख नायनार अपनी जायदाद जैसे खेत खलिहान, घर, घर की चीजें - सब बेचकर उससे मिले धन से शिवभक्तों के लिए भोजन आदि का प्रबंध करता था। दिन बीतते गए। अंततः वह कौड़ी - कौड़ी के लिए तरसने लगा।

मूर्ख नायनार द्यूत - कीड़ा (जुआ) में निपुण था। इसलिए वह जुआ खेलकर, धन कमाकर, उससे भक्तों की जरूरतों को पूरा करता था। कुछ दिनों के पश्चात् कोई भी उसके साथ जुआ खेलने नहीं आया। सदा वही जीता करता था। इसलिए कोई उसके साथ खेलने क्यों आता?

मूर्ख नायनार उस गाँव को छोड़, प्रसिद्ध शिवालय जहाँ - जहाँ हैं, वहाँ जाकर जुआ खेलता था और शिव भक्तों के लिए भोजन का प्रबंध करता था।

जुआ में हारने पर कोई आदमी पैसा देने से इन्कार करता तो वह अपनी तलवार से उन्हें काट देता था। इसलिए 'अच्छा जुआरी' और 'मूर्ख', कहकर ग्रामीण लोग बुलाते थे। जुआ खेलने पर मिलने वाली आय को दोषपूर्ण मानकर मूर्ख नायनार उन रुपयों को छूता नहीं था। खाना पकानेवालों को ही जुए के रुपयों को लाने के लिए भेजता था। रुपये लेकर वे शिवभक्तों को भोजन देते थे। भक्तों के खाने के बाद अंत में स्वयं भोजन करता था। इस प्रकार कई वर्षों तक प्रभु - सेवा में अपना जीवन लगाकर अंत में शिवलोक में चला गया।

32. सोमासि मार नायनार

तिरुवंबर नामक एक पवित्र धाम में एक ब्राह्मण परिवार में सोमासि नायनार का जन्म हुआ। उसके बचपन का नाम मारन था। वेदों के अनुसार शैव यज्ञ करनेवाले उत्तम ब्राह्मण सादर सोमयाजी कहलाते थे। मारन ने कई यज्ञ किए। इस कारण उसे सोमासि मारन कहते हैं।

वह शिव भक्तों को तृप्ति से भोजन आदि देकर संतोष कर लेता था। तिरुवारूर जाकर उसने सुंदरमूर्ति नायनार के दर्शन कर, उसका प्रेमपात्र बना। सुंदरमूर्ति नायनार उसे चाहने लगा। इसने उनकी सेवा कर, चरण - कमलों की वंदना कर, शिवलोक में शिव का सान्निध्य पा लिया।

33. साक्किय नायनार

तिरुच्चंग मंगै नामक पावन धाम में एक शिव भक्त का जन्म हुआ। उसका नाम साक्किय नायनार था। वह बड़ा बुद्धिमान था। उसने बहुत कम समय में हँसते - खेलते कई विद्याओं का अर्जन किया। वह सभी

प्राणियों के प्रति प्रेम तथा दयाभाव रखता था। 'अब दूसरा जन्म नहीं लेना है, इसी जन्म में भव बंधनों से मुक्त होना होगा', कहता हुआ साक्कियार ने दृढ़निश्चय कर लिया।

कुछ समय पश्चात् साक्कियार कांची नगर जाकर बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गया। शिवपूजा ही भवरोग की दवा है। उसे ज्ञानोदय हुआ। शिवजी एक ही सच्चे देवता हैं। किसी भी स्थिति में हो, किसी भी भेस में हो महादेव के चरणों में जानेवाले को ही मुक्ति मिलती है। शिवलिंग के दर्शन के पश्चात् ही वह भोजन करता था। उसके जीवन में यह एक नियम बन गया था। एक बार उसने एक बहिरंग प्रदेश में शिवलिंग को देखा। प्रेम, आश्चर्य और संतोष तीनों भाव एक साथ ही उसके मन में उभर आये। इसी संभ्रम में उसने एक पत्थर उठाकर शिवलिंग पर फेंका।

शिवजी इस कार्य से प्रसन्न हुआ। अगले दिन यथा समय साक्किय नायनार शिवलिंग के पास आया। पहले दिन के समान उसने शिवलिंग पर पत्थर फेंक प्रसन्न हुआ। यह उसकी आदत बन गई। रोज वह शिवलिंग पर पत्थर फेंकता गया। भगवान ने उसे अर्चना पुष्प की तरह स्वीकार किया।

एक दिन साक्किय नायनार भोजन करने बैठ गया। उस समय 'हाय! आज मैं ने पत्थर नहीं फेंका। नियम तोड़कर भोजन पर बैठ गया।' वह तेजी से उठ शिवलिंग के पास दौड़ पड़ा। एक पत्थर उठाकर शिवलिंग पर फेंका।

शिवजी ने अपने इस भक्त को शिवलोक प्रदान कर उस पर अनुग्रह किया।

34. सिरप्पुलि नायनार

अति संपन्न चोल देश में तिरुवाक्कर नामक गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में सिरप्पुलि नायनार नामक शिवभक्त का जन्म हुआ। वह स्वभाव से उदार था। जो भी उसके द्वार पर माँगने आता था कुछ न कुछ देकर उसे तृप्त करता था।

अपने पास आये शिव भक्तों से मधुर बोली में बात कर, खुशी से आमंत्रित कर, मधुर पदार्थों को खिलाकर संतुष्ट होता था। भक्तों की इच्छापूर्ति में लगा रहता था। जीवन भर पंचाक्षरी का जप करता हुआ, वह अंत में शिवजी के चरण-कमलों की सन्निधि में पहुँच गया।

35. चिरुतोण्ड नायनार

कावेरी नदी-जल से पावन चोल देश में सुसंपन्न तिरुच्चेंगाट्टम्गुडि नामक गाँव है। उस गाँव में परंज्योतियार नामक शिवभक्त का जन्म हुआ। वह अपनी पत्नी तिरुवेण्गाट्टु नंगै से मिलकर शिवभक्तों की सेवा के परम उद्देश्य से जीवन-यापन कर रहा था। शिवभक्तों को भोजन खिलाने के बाद ही वह भोजन करता था। उसने इसे अपना नियम बना लिया था। ऐसे सेवी भक्त अपने को छोटा, साधारण और अल्प मानकर शिवभक्तों की सेवा में लगा रहता था। इस कारण से उसका नाम चिरुतोण्डर (छोटा भक्त) पड़ा।

इस प्रकार भक्तों की सेवा में उसका समय बीत रहा था कि उसके घर में एक पुत्र का जन्म हुआ। उसे सीराला देव नाम दिया गया। पति-पत्नी बड़े लाड़ - प्यार से उसका पालन - पोषण कर रहे थे।

कैलाशवासी शिवजी ने चिरुतोण्ड की भक्ति को परखकर उस पर अनुग्रह करना चाहा। इसलिए वह एक भैरव योगी का भेष धारण कर

उस गाँव में आया। वह चिरुतोण्डर के घर के आगे खड़ा होकर - 'शिव भक्तों की निरंतर सेवा एवं भक्तिभाव से उनकी इच्छाओं को पूरा की', तब धर्म पत्नी ने बाहर आकर विनयपूर्वक कहा - 'महाशय! मेरे पति ने एक व्रत लिया है, जिसके अनुसार वे शिवभक्तों को भोजन देने के बाद ही वे भोजन करते हैं। आज कोई शिवभक्त मिला नहीं। इसलिए उन्हें ढूँढते वे बाजार गए हैं। आपको देखेंगे तो वे अवश्य संतुष्ट होंगे। आप भीतर आकर बैठ जाइये।'

भैरव भेषधारी शिव ने कहा 'मैं चिरुतोंडर को देखने आया हूँ। उनकी अनुपस्थिति में मैं अन्दर नहीं आ सकता। मैं यहाँ गणपति सारम् मंदिर के समीप के गूलर के नीचे बैठा रहूँगा। जब तुम्हारे पति आयेंगे, तो कह देना।' ऐसा कहकर वह वहाँ से चला गया।

शिवभक्तों को दूँढ़ता हुआ गया चिरतोण्डर शिवभक्तों के दिखाई न देने के कारण निराश हो घर लौटा। पति को देखते ही पत्नी ने ऐसा कहा - 'आप जब बाहर गए थे तब एक शिव भक्त यहाँ आया था। अब वह गणपति सारम् मंदिर के गूलर के नीचे बैठा है।' इन बातों को सुन वह खुशी से तेज गति में जाकर भैरव मुनि को प्रणाम कर - 'महाशय! आप हमारे घर पर आज भोजन स्वीकारें', भक्ति पूर्वक बोला। यह सुन उस शिवयोगी ने कहा - 'मैं छः महीनों में एक बार माँस खाता हूँ, यह मेरा नियम है।' यह सुन चिरुतोंडर ने हाथ जोड़कर कहा - 'महाशय! आप संदेह न करें। मेरे यहाँ जानवर, भैंस, भेड़, बकरियाँ झुण्डों में हैं। उनमें जो आपको - पसन्द हैं, उसे काट, पकाकर खिलाऊँगा।'

चिरुतोण्डर के प्रेमपूर्ण वचनों को सुनकर शिवयोगी ने कहा - 'हे भक्त! तू समझ रहा है कि मैं पशुमाँस खाऊँगा। लेकिन मुझे मानव - माँस

चाहिए। वह मानव भी पाँच साल से कम का हो। शरीर के अवयव ठीक हों। उनमें कोई कमी न हो। वैसा माँस ही मैं खाऊँगा। यही नहीं वह बालक माता - पिता की इकलौती संतान हो। उस बालक को पिता काटे और माँ उसे पका कर रखें। दोनों खुशी से इस कार्य को पूरा करें। ऐसे माँस को ही मैं खाऊँगा।' यह सुन चिरुतोण्डर ने कहा - 'प्रभु! यह कोई बड़ी बात नहीं। आपका मेरे यहाँ भोजन स्वीकारना ही मेरा अहोभाग्य मानता हूँ। मैं जाकर भोजन का प्रबंध करुँगा।' वह घर लौट आया। पति के आगमन की प्रतीक्षा में उसकी पत्नी द्वार पर खडी थी। पति को देखकर उसे खुशी हुई। नायनार ने अपनी पत्नी से कहा - 'शिवयोगी हमारे घर पर भोजन करने को तैयार हैं। एक छोटे बालक को मार उसके माँस को पकाकर देने से वह स्वीकार करेगा। वह बालक भी पाँच वर्ष का हो। उसके सारे अवयव ठीक-ठाक हों। माँ उसे पकड़े और पिता उसके शरीर को टुकड़ों में काटकर पकाने योग्य बनावे।'

तिरुवेण्गट्टु नंगै ने भी पति की बातों को स्वीकारा। 'देर मत कीजिए। पाठशाला गए अपने पुत्र को बुला लाइए।' पति से पत्नी ने कहा। चिरुतोण्डर पाठशाला जाकर अपने पुत्र को अपनी भुजा पर बिठाकर घर ले आया।

माता-पिता ने अपने पुत्र को खूब नहाया। बालों को साफ कर, चंदन लगाकर, आँखों में काजल देकर, नये कपडों से सजाया। माता ने अपने पुत्र श्रीराल देव के हाथ-पैरों को अपने हाथों से पकड़ लिया। पति अपने पुत्र के शरीर को काटने लगा। माता-पिता खुशी से यह काम कर रहे थे। श्रीराल देव के मुख पर खुशियाँ छलक रही थीं।

तिरुवेण्गट्टु नंगैयार ने सिर के भाग को अभोज्य मान, उसे सुरक्षित रखने के लिए चंदन दादी को सौंप कर, शरीर के अन्य भागों से विविध

प्रकार के व्यंजनों को बनाया। चिरुतोण्डर ने खुशी - खुशी भैरव योगी के पास जाकर नमस्कार कर कहा - 'महाशय! आपने जैसा चाहा वैसे ही हमने सब तैयार किया। आप भोजन के लिए पधारिए।' विशाल केले के पत्ते पर सभी पदार्थ रखे गए। उन्हें देख शिवयोगी ने कहा - 'मैं ने जैसा कहा वैसा ही शरीर के सभी भागों को पकाया न?' यह सुन - 'सिर के भाग को अभोज्य मान उसे हमने नहीं पकाया।' 'हम उसे भी खायेंगे' कहने पर चिरुतोण्डर और उसकी पत्नी चिन्तित हो गए। तब चंदन दादी ने - 'मैं ने सिर के भाग को भी पकाया। वह तैयार है', कहकर उसने उसे भी लाकर वहाँ रखा। पति-पत्नी ने सानन्द उसे भी परोसा।

तब भैरव शिवयोगी ने एक शर्त और लगा दी। 'मुझे अकेले बैठकर खाने की आदत नहीं है। तुम्हारे यदि पुत्र हो तो उसे बुलाओ। मेरे साथ वह भी बैठकर खायेगा।' शिवयोगी ने आज्ञा दी। 'वह तो यहाँ नहीं है - ' चिरुतोण्डर ने कहा। 'तेरा पुत्र यहाँ आयेगा तो मैं भोजन करुँगा। तू जोर से बुला' - शिवयोगी ने चिरुतोण्डर से कहा। शिवयोगी की बातों के अनुसार सपत्नीक उसने जोर से पुकारा। भगवान की कृपा से श्रीराल देव पाठशाला से दौड़ता हुआ आया। माँ ने अत्यंत प्यार से श्रीराल को बाहों में लिपटा लिया। बाद में उसने अपने पति के हाथों में दिया। अब शिवभक्त के भोजन करने में कोई रुकावट नहीं थी, क्योंकि सारी शर्तें पूरी हुई थीं। लेकिन भैरव रूप में आये महादेव तब तक अदृश्य हो चुके थे। उस समय आकाश में शिवपार्वती तथा कुमार स्वामी सहित सारा परिवार प्रकट हुआ। तब चिरुतोण्डर, तिरुवेननाट्टु नंगै, श्रीराल देव, चंदन दादी ने शिव, पार्वती, कुमार स्वामी को नमरस्कार किया और उन्होंने उनकी स्तुति भी की। प्रसन्न भोले शंकर ने उन्हें शिवलोक प्रदान किया।

36. कलरिट्रिवार नायनार

सुन्दर कोडुंगोलूर नगर में चेर राज वंश का पेरमाकोदैयार नामक शिवभक्त रहता था। वह अपनी वृत्ति को भूल तिरुवंजै कलम के महादेव की सेवा में सदा लगा रहता था।

चेर राज्य को अत्यंत सावधानी से पालन करता आया सेंगोर पोरैयन नामक चेर राजा ने सुख-भोगों से विरक्त होकर सन्यास को ग्रहण किया। इस कारण चेर देश में उपद्रव मच गया। सारे अमात्य मिलकर पेरुमाकोदैयार के पास जाकर प्रार्थना की - 'राजा के अभाव में देश में न शान्ति है और न सुरक्षा ही। हर जगह छिन्न - भिन्न स्थिति है। देश अशान्त है। आप राजवंश में चेर हैं। इस कारण से, अधिकार अपने हाथ में लेकर देश की रक्षा कीजिए।' 'मैं शिव - सेवा में लगा हूँ। शासन कार्य सरल नहीं है। जिम्मेदारी से काम करना पड़ता है। अगर इससे मेरी सेवा - कार्य में कोई रुकावट न आयेगी, तब इस दायित्व को संभाल पाऊँगा।' पेरुमाकोदैयार की बातों को अमात्यों ने स्वीकार किया। भगवान महादेव की कृपा से सकल जीवों की भाषाओं को समझने की शक्ति, दानगुण, राज्य पर शासन की निपुणता उन्हें प्राप्त हुई।

पेरुमाकोदैयार, मंदिर जाकर भगवान महादेव को भक्तिपूर्वक नमस्कार कर, अमात्यों, सैनिक अधिपतियों, परिवार के लोगों के साथ आने पर, हाथी पर चढ़कर, नगर - भ्रमण के लिए चल पड़ा। तब एक रजक लोनी मिट्टी की गठरी ढोता हुआ सामने आया। वर्षा के कारण लोनी मिट्टी गलकर उसके शरीर भर फैल गयी। उसका शरीर सफेद हो गया। वह दृश्य ऐसा था, जैसे कोई शिवभक्त शरीर पर विभूति धारण किया हुआ हो। तुरन्त राजा ने हाथी से उतरकर उस धोबी को

भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। वह धोबी थरथर काँपता बोला - 'राजन! मैं आपके अंतःपुर में काम करनेवाला धोबी हूँ।' राजा ने कहा - 'मैं भक्तों का दास हूँ। तुम शिव भक्त नहीं हो, फिर भी शिवभक्त का स्मरण दिला रहे हो।' ऐसा कहकर राजा ने उसे उपहार देकर भेज दिया।

'सकल संपदाएँ, राज्याधिकार, भक्ति एवं श्रद्धा - सब चिदंबरम में नर्तन करते शिव के तिरुचरण ही हैं', ऐसा विश्वास पेरुमाकोदैयार शिव पर रखता था। राजा ने नटराज प्रभु के चरण - कमलों के साथ निष्ठा पूर्वक पूजा की। शिवजी ने उस पर अनुग्रह कर - 'प्रतिदिन पूजा की समाप्ति पर मेरे चरणों के पाजेब की ध्वनि सुनने की शक्ति तुम्हें मिलेगी', शिवजी ने आशीष दिया। तब से राजा अर्चना के पश्चात् महादेव जी के चरणों के पाजेब की ध्वनि को सुनता और आनंद सागर में डोल जाता।

पुण्यधाम मदुरै में विलसे महादेव की रोज संगीत से स्तुति करता प्राणभद्र नामक गरीब रहता था। भगवान उसकी दरिद्रता को दूर करना चाहता था। एक रात शिवजी उसके सपने में प्रकट होकर 'तुझे सकल संपदाएँ प्रदान करने के लिए हमने पेरुमाकोदैयार से कह दिया है। इस पत्र को देकर राजा जो देता है, तू उसे स्वीकार कर।' कहकर ताड़पत्र पर लिखकर एक पत्र दिया। प्राणभद्र उस पत्र को लेकर राजा को देता है। उस पत्र को पढ़कर राजा फूला नहीं समाता। वह अपने खजाने से अपार संपत्ति देता है। एक हाथी पर रख उस धन को वह अपने घर ले जाता है।

सभी जीवों की भाषाओं को समझने की शक्ति उसे भगवान ने प्रदान किया था। इस कारण पेरुमाकोदैयार उनके कष्टों को समझ कर,

उनके जीवन के विघ्नों को दूर कर सुख - शांति से जीने का प्रबंध करता है। इस कारण वह कलरिट्रिरिवार नायनार के नाम से विख्यात हुआ।

चेर नरेश (कलरिट्रिरिवार नायनार) के मन में चिदंबरम के प्रभु नटराज तथा सुंदरमूर्ति को देखने की इच्छा होती है। अपने अमात्य तथा परिवार के साथ वह चिदंबरम की ओर निकल पड़ता है। पोन्नम्बलम के भगवान नटराज का दर्शन करके, उनके पाजेब की सुमधुर ध्वनि सुनकर मुग्ध हो जाता है। चेर नरेश कुछ दिनों तक चिदंबरम में रहा। पश्चात् वह सुंदरमूर्ति नायनार के दर्शन के लिए तिरुवारूर की ओर निकल पड़ा। चेर नरेश के आने की बात सुन सुंदरमूर्ति उनकी अगवानी करने निकल पड़ता है। चेर नरेश ने सुंदरमूर्ति के तिरुचरणों को नमन किया। सुंदरमूर्ति ने भी चेर नरेश को नमस्कार किया। दोनों ने मंदिर में जाकर परमशिव के दर्शन किए।

चेर नरेश ने सुंदरमूर्ति नायनार के चरण-कमलों का स्मरण करते हुए, निष्ठा सहित शिवजी की सेवा करता हुआ, तथा धर्मबद्ध शासन करता हुआ अपने शेष जीवन को बिताया।

37. गणनाथ नायनार

तिरुज्ञान संबंधर के अवतरित शीर्गाली पुण्यधाम में एक ब्राह्मण परिवार में गणनाथ नामक शिवभक्त का जन्म हुआ। उसके जीवन का लक्ष्य था शिवजी की सेवा, पूजा एवं ध्यान करना। वह अपना सारा समय प्रभु-सेवा में बिताता था। बाग-बगीचों में फूलों के पौधों को बढ़ाकर, सुरभित पुष्पों से मनोहर मालाओं को बनाकर, प्रभु को अर्पित कर प्रसन्न होना ही उसने अपना लक्ष्य बना लिया। प्रभु के अभिषेक के लिए पवित्र जल ले आना, मंदिर के दीपों को आलोकित करना, पावन

शैव ग्रंथ 'तिरुमुरै' का पठन करना, उस धर्मग्रंथ के प्रतियों को तैयार कर भक्तों में बाँटना आदि कार्यों को वह प्रसन्न मन से किया करता था।

महान शिवभक्त गणनाथ नायनार तिरुज्ञान संबंधर को प्रत्यक्ष देवता मानकर तीनों पहर उनके पास जाकर भक्तिपूर्वक उनके आगे प्रणत होता था। देहावसान के पश्चात् गणनाथ नायनार कैलाश पहुँचकर शिवगणों का मुखिया बन भगवान शिवजी की सेवा करने का भाग्य प्राप्त किया।

38. कूट्रुव नायनार

तिरुक्कलंदै नामक नगर में अवतरित महान शिवभक्त हैं कूट्रुव नायनार। ये एक मण्डल के अधिपति थे। इसने कई युद्ध कर, राजाओं को हराकर, उनके राज्य के कुछ प्रदेशों को अपने वश में कर लिया। इसने स्वर्ण - मुकुट को धारण कर राजतिलक की आकांक्षा की थी।

राजतिलक कराने का अधिकार उन दिनों में केवल चिदम्बरम के दीक्षितों को ही था। कूट्रुव नायनार ने उनके पास जाकर राजतिलक के कार्यक्रम को संपन्न कराने को कहा। 'हम चोल सम्राटों को छोड़कर किसी और का राजतिलक नहीं करेंगे' कहकर उन्होंने खरा जवाब दिया। लेकिन वे कूट्रुव नायनार से डरकर चेर देश पहुँच गए।

कूट्रुव नायनार ने इस परिणाम से दुखी होकर प्रार्थना की - 'हे महादेव! आपके चरण - कमलों में इस दास को मुकुट के रूप में अलंकृत करें' उसी दिन को रात में करुणा सागर शिवजी ने उसके सपने में प्रकट होकर अपने चरण - कमलों को मुकुट के रूप में अलंकृत किया। उसे सिर पर धारण कर कूट्रुव नायनार ने अनेक वर्षों तक

धर्मबद्ध शासन किया। पश्चात् वह शिव - मंदिरों के दर्शन करता हुआ अंत में शिवजी के चरणों में शाश्वत स्थान को प्राप्त किया।

39. पुगल् चोल नायनार

उरैयूर को राजधानी बनाकर शिवभक्त पुगल् चोल ने धर्म - संगत शासन किया। शिवभक्तों के लिए उसने कोई कमी नहीं किया, उन्हें सब कुछ प्रदान किया।

एक बार 'अधिक' नामक सामन्त राजा ने कर न देकर पुगल् चोल का विरोध किया। चोल सम्राट ने अपने सेनापति को बुलाकर, अपनी चतुरंग बल से 'अधिक' के राज्य में जाकर उसके घमण्ड को चकनाचूर करने के लिए कहकर भेजा। चोल सम्राट की सेना तथा अधिक की सेना के बीच भयंकर युद्ध हुआ। सम्राट की सेना ने अधिक का वध कर, उसके राज्य को मटियामेट कर दिया तथा, वहाँ की संपत्ति को अपने राज्य में भेज दिया। जो युद्ध में मारे गये शत्रु वीरों के सिरों को भी चोल सम्राट के आगे डाल दिया। इस प्रकार शत्रु वीरों के ढेर सारे सिरों में एक ऐसा सिर था, जिसके माथे पर भभूति लगी हुई थी। चोल सम्राट ने उसे देखा। राजा ने पहचान लिया कि वह एक शिवभक्त का सिर है। आँखों से अश्रुधाराएँ बह रही थीं - 'हाय! कितना बुरा हुआ, शिवभक्तों की रक्षा न कर पानेवाले को जीने का अधिकार, नहीं है।' अमात्य को बुलाकर अपने पुत्र को राजगद्दी पर बिठाने के लिए आज्ञा दिया और, उसने अपना राज्य छोड़ दिया। एक बड़े अग्नि कुण्ड को बनाने की अपने सैनिकों को आज्ञा दी। लड़ाई में शिवभक्त के कटे सिर को स्वर्णिम थाली में सजा कर पंचाक्षरी का जप करता, सबके समक्ष

अग्निकुण्ड में प्रवेश किया। देवताओं ने इस अद्‌भुत भक्त पर पुष्प - वृष्टि की। चोल सम्राट शिवजी के चरण - कमलों में विलीन हो गया।

40. नरसिंग मुनैयरैय नायनार

तिरुमुनै पाडिनाडु राज्य का शासक नरसिंग मुनैयरैय नायनार धर्म मार्ग पर शासन कर रहा था। यह बड़ा शिवभक्त था। शिवभक्त जो भी माँगते थे, उसे मुनैयरैय नायनार पूरा करता था।

पावन तिरुवादिरै (आरुद्रा) नक्षत्र के शुभ दिन के अवसर पर राजा नरसिंग सभी शिवालयों में विशेष पूजाएँ कराता था। उस दिन को सारे शिवभक्तों को सुमधुर पदार्थों से संतुष्ट करता था। जाते समय एक - एक भक्त को सौ स्वर्ण मुद्रायें दिया करता था।

एक बार इस प्रकार भक्तों को सम्मानित कर रहा था कि शरीर भर संभोग की निशानियों से, अस्त - व्यस्त कपड़ों से एक आदमी शिवभक्त के भेस में वहाँ गया। राजा ने उसे सादर आमंत्रित किया। शिवभक्त अगर नैतिक मार्ग को छोड़ दें, तब भी अगर कोई उनका अपमान करता है, तो वह घोर नरक में प्रवेश करेंगा, यह सबको बताने के लिए राजा ने उस भक्त को दुगनी स्वर्ण मुद्राएँ देकर आदर बढ़ाया। नरसिंग मुनैयरैय नायनार इस प्रकार शिवभक्तों का सम्मान करता हुआ, शिवजी की सेवा करता हुआ शिवलोक को प्राप्त हुआ।

41. अतिबत्त नायनार

चोल देश नामक कल्पवृक्ष में विकसे फूल - सा नागपट्टण का वर्णन होता है। यह सागर तट पर है। अतिबत्तर का जन्म मछुवारों की जाति में हुआ था। यह महान शिवभक्त था। वंशपरंपरागत के अनुरूप यह भी

मछलियाँ पकड़ लाता था। कभी इसने शिवभक्ति के मार्ग को छोड़ा नहीं था। जब जाल में पहली मछली फँसती, उसे वह शिवजी को अर्पित करता था। उसे पानी में छोड़ देता था। यह उसका व्रत बन गया था।

कभी - कभी अतिबत्त नायर को केवल एक मछली ही मिलती थी। उसे भी वह पानी में छोड़ देता था। कई दिनों तक उसे रोज एक ही मछली मिलती रही। वह उन्हें पानी में नियमानुसार छोड़ खाली हाथ घर लौटता था। घर के लोग भूख से छटपटा जाते थे। फिर भी वह अपने नियम का उल्लंघन नहीं करता था। धीरे-धीरे उसका शरीर ठठरी जैसा बदलता गया।

एक दिन उसके जाल में अपूर्व स्वर्ण निर्मित, हीरे - जवाहरात से गढ़ा सोने की मछली फँसी। वह बहुत ही कीमती थी। फिर भी उसने नियम के अनुरूप पानी में छोड़ शिवार्पण कहा। संपत्ति के लिए लोग बहुत तरसते हैं, पर अतिबत्त ने उसे तिनके - जैसा मान शिवार्पण कर दिया। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान महादेव ने वृषभ वाहन पर प्रकट होकर उसे शिवलोक प्रदान किया।

42. कलिक्कंब नायनार

तिरु पेन्नागडम् नामक नगर में एक वैश्य परिवार में जन्मा शिवभक्त है कलिक्कंब नायनार। शिव भक्तों को साक्षात शिव स्वरूप मानकर सादर उनकी सेवा करता था। उन्हें पदार्थों को खिलाकर, उन्हें स्वादिष्ट तप्त करता था।

एक हर दिन की तरह शिवभक्त कलिक्कंब नायनार के घर गये। उसकी पत्नी पानी दे रही थी और वह शिवभक्तों के चरणों को धो रहा

था। इस प्रकार नायनार एक भक्त के चरण को पकड़कर उन्हें धोना प्रारंभ किया। उसकी पत्नी ने पानी नहीं दिया। वह सोचने लगा कि सब शिवभक्तों के चरण धोने में मेरी पत्नी ने अपने धर्म को निभाया। अब क्यों उसने पानी नहीं दिया? उसका कारण क्या हो सकता है? तुरन्त नायनार की पत्नी ने उस शिवभक्त को दिखाकर 'यह अपने घर में नौकर था।' नायनार आपे से बाहर हो गया। तुरन्त तलवार से पत्नी का हाथ काट दिया। बाद में उसने अपने हाथ में पानी लेकर उस शिवभक्त के चरणों का अभिषेक किया। भगवान महादेव ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे शिवलोक प्रदान किया।

43. कलिय नायनार

तोण्डा मण्डल के प्रख्यात धामों में तिरुवोट्रियूर एक है। उस गाँव में तेली जाति में एक महान शिवभक्त कलिय नायनार अवतरित हुआ। तिरुवोट्रियूर के महासंपन्न कलियनार ने शिव मंदिर जाकर रात - दिन दीप जलाने का एक व्रत लिया। उसकी शिवभक्ति को भगवान महादेव जगत प्रसिद्ध करना चाहते थे। तब से क्रमशःउसकी संपत्ति रोज - रोज घट जाने लगी। फिर भी कलिय नायनार ने अपने व्रत को कायम रखा। दीप प्रज्ज्वलन कार्य को रोका नहीं। वह मजदूर बना। इस कार्य से जो भी मिलता था, उसे दीप - जलाने में खर्च करता था। कुछ दिनों के बाद उसकी मजदूरी का काम भी बन्द हो गया। घर को, घर की चीजों को बेच दीपाराधना के कार्य को उसने गतिशील रखा। जब सारा धन खर्च हो गया, तब वह अपनी पत्नी को बेचना चाहा। उसने नगर में अपनी पत्नी को ले जाकर बेचना चाहा, पर कोई खरीददार नहीं मिला।

दीप कैसे जलाये? उसके आगे कोई रास्ता न था। मंदिर में जाकर उसने ढिबरियों को कतार में सजाया। उनमें बत्तियों को रखा। 'दीप जलाये बिना जीवित रहना बेकार है। इससे तो मरण भला है। मैं अपने खून से दीपों को जलाऊँगा।' उसने मरने का निश्चय किया। उसने तलवार से शरीर को चुभो लिया। करुणा सागर भगवान महादेव प्रकट हुए। उसने अपने भक्त कलिय नायनार को शिवलोक प्रदान किया।

44. सत्ति नायनार

कावेरी नदी तट पर सुंदर गाँवों में विरिंजैयूर एक है। उस गाँव में सत्ति नायनार अवतरित हुआ। अगर कोई शिवको, शिवभक्त को, या शैवमत से संबध रखने वाला हों, कोई इन्हें दूषित करता तो अपनी तलवार से उनकी जीभ काट देता था। निन्दा करनेवाले इस जन्म में कष्ट, अगले जन्म में नरक न पाने के लिए नायनार प्रेम से वही काम करता था। इस प्रकार वह अपने जीवन भर शिव - द्रोहियों की जीभ काटता रहा और अंत में शिवजी के चरण - कमलों को प्राप्त किया।

45. ऐयडिगल काडवर को नायनार

तोण्ड मण्डल के काँची नगर को राजधानी बनाकर ऐयडिगल काडवर को नायनार नामक राजा धर्मपथ का अनुसरण करता हुआ, जनता को अपनी संतान - सा मानता हुआ राज्य कर रहा था। यह एक शिवभक्त था। उनके शासन में जनता ने सुख - चैन से जीवन बिताया था। शैवमत का विकास इनके शासन काल में तीव्रगति से हुआ था।

ऐयडिगल काडवर नायनार को शासन से तथा भौतिक सुखों से मन उठ गया था। परलोक की चिन्ता अधिक हुई। अपने पुत्र को राज्यभार सौंपकर स्वयं उसने पूर्व की तरह शैवमत की व्याप्ति के लिए अपना समय बिताया। देश भर के शिव मंदिरों में जाकर एक - एक मंदिर पर

एक - एक पद्य की रचना की। इस संग्रह का नाम उसने 'क्षेत्रवेण्बा' रखा। शिवभक्तों की सदा सेवा करता हुआ वह अंत में शिवलोक पहुँच गया।

46. कणम् पुल्ल नायनार

वेल्लार नदी के दक्षिण तट पर एक सुसंपन्न इरुक्कुवेलूर नामक गाँव है। पुल्लार नामक शिवभक्त उस गाँव का मुखिया था। वह शिवभक्त और शिवमंदिरों में रोज नियमानुसार दीप जलाया करता था। वह इसे पुण्यकार्य मानता था। कुछ समय बाद उसकी सारी संपत्ति समाप्त हो गयी। इस कारण उसे गरीबी में दिन काटने पड़े। गरीबी में उसने दीप जलाने का पवित्र कार्य नहीं छोड़ा। वह चिदंबरम गया। वहाँ मजदूर का काम करता हुआ दीप जलाने के कार्यक्रम को विधिवत् चलाता रहा। अब मजदूर का काम बंद हो गया। वह 'कणम्' नामक घास काट कर लाता और बाजार में बेच देता। जो भी मिलता उससे शिवमंदिर में दीप जलाता। एक समय की बात है। किसी ने भी उसकी घास को नहीं खरीदा। इस कारण उसने घास की गठरी में ही आग लगा दी। वह तुरन्त बुझ गई। नायनार को एक - पहर तक दीप जलाने की आदत थी। इस कारण उसने अपने बालों में आग लगा दी। शिवजी ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे शिवलोक प्रदान किया।

47. कारी नायनार

तिरुक्कडऊर नामक गाँव में विद्वानों से प्रशंसा पाया कारी नायनार नामक पंडित का जन्म हुआ। उसने 'कारी कोवै' नामक ग्रंथ की रचना की। पाण्ड्य, चोल, चेर देशों के तीनों सम्राटों ने उसकी विद्वत्ता से लट्टू होकर असंख्य पुरस्कारों को प्रदान किया। इस प्रकार मिली संपत्ति को

कारी नायनार ने अपनाया नहीं। उससे शिवमंदिरों का निर्माण किया। शिव भक्तों के लिए आवश्यक सामान जुटाया। उसके मन में कैलाश पर्वत ही सदा डोलता रहता था। जैसा नायनार सोचा करता उसे उसी प्रकार मरणोपरांत कैलाश मिला। वह शिवजी के गणों में एक बन शिव - सेवा में अपने को लीन रखा।

48. निन्नसीर नेडुमार नायनार

निन्नसीर नेडुमार पांड्य देश का सम्राट था। जैन धर्मावलंबी था वह। तिरुज्ञान संबंधर के अनुग्रह से वह शैवधर्मी बन गया। इनके जमाने में उत्तर भारत से कुछ राजा मिलकर तिरुनेलवेली पर घेरा डाल दिया। नेडुमार नायनार इनसे लड़कर विजयी हुआ। इन्होंने पाण्ड्य देश पर कई वर्षो तक शासन किया। उसका प्रगाढ़ विश्वास था कि शिवजी के तिरुचरण ही भव सागर के बंधनों से मुक्त करेंगे। इसके बारे में ''तिरुज्ञान संबंधर'' नामक पुराण में विपुल चर्चा हुई है।

49. वायिलार नायनार

तोण्ड मण्डल के सागर तटीय गाँवों में प्रमुख है मैलापूर। उस गाँव में वेलाल परिवार में वायिलार का जन्म हुआ। यह महान् शिवभक्त था। उसने अपने हृदय को मंदिर - सा बना लिया। उसमें भगवान को स्थापित कर लिया। उसमें ज्ञान नामक दीपक को प्रज्ज्वलित किया। उफनते आनंद जल से प्रभु का अभिषेक किया। प्रेम नामक नैवेद्य को अर्पित किया। इस प्रकर भगवान महादेव की नित्य - पूजाएँ करता वायिलार नायनार ने अपना जीवन बिताया। शिवजी ने इसकी भक्ति से प्रसन्न होकर इसे अपने गणों में स्थान दिया।

50. मुनैयडुवार नायनार

चोलनाड में नीडूर नामक गाँव धन, धान, और पशु - संपदा से हराभरा हो विराजता था। उस गाँव में मुनैयडुवार नायनार नामक शिवभक्त रहता था।

शत्रु से युद्ध में पराजित लोग इसके पास आकर सहायता के लिए प्रार्थना करते थे। यदि वह युद्ध धर्म - सम्मत हो तो मुनैयडुवार नायनार उनके साथ जाता था। शत्रुओं से भिड़कर उन्हें विजय प्रदान कर आता था। उसके अनुकूल मेहनताना भी लेता था। उस धन से शिवभक्तों के भोजन की व्यवस्था करता था। बहुत समय तक शिवभक्तों की सेवा में, भोजन खिलाकर संतृप्त होकर अंत में शिव के अनुग्रह से शिवलोक पहुँच गया।

51. कलर सिंग नायनार

पल्लव वंश में जन्मा कलर सिंग नायनार भगवान के चरण - कमलों को छोड़ अन्य किसी की चिन्ता न थी। एक शिव भक्त होने के कारण उसने शैवक्षेत्रों के दर्शन कर, प्रभु - सेवा की आकांक्षा से सपत्नीक तिरुवारूर पहुँच गया। पत्नी सहित, अमात्य परिवार जन के साथ उसने मंदिर में प्रवेश किया। रानी वहाँ के पुष्प मण्डप के निकट गई। तब उसके सामने एक फूल आ गिरा। उसने उस फूल को लेकर सूँघा। इस को देख सेरुतुणै नायनार नामक शिवभक्त ने अपने क्रोध को रोक न सकने के कारण 'इसने शिवमंदिर से संबंधित फूल को सूँघा, यह शिवापराधी है' कहकर तेज गति से जाकर तलवार से रानी की नाक को काट दिया। नाक से रक्त की धारा बहने लगी।

तब प्रभु के दर्शन कर कलर सिंग नायनार वहाँ आया। अपनी पत्नी को देखकर 'निर्भय होकर मेरी पत्नी के साथ निर्दयी व्यवहार करनेवाला कोन है?' कहते हुए अपनी लाल-लाल आँखों से, क्रोध से थरथर काँपते शरीर से वहाँ उपस्थित लोगों से प्रश्न किया।

तब पास खड़े सेरुत्तुनै नायनार ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। तुरन्त कलर सिंग नायनार ने - 'महाशय! आपने जो दण्ड दिया, वह पर्याप्त नहीं है। पहले पुष्प को उठाने वाले हाथ को काट देना चाहिए था' कहकर अपने पास की तलवार से कंगन सहित प्रिय पत्नी के हाथ को काट दिया। यह देख देवताओं ने पुष्पवृष्टि की। अपूर्व शिवभक्ति को प्रदर्शित करनेवाला कलर सिंग नायनार कई वर्षों तक शासनकार्य कर अंत में शिव-सेवा के लिए उनके तिरुचरणों में पहुँच गया।

52. इडंगलि नायनार

कोनाडु प्रदेश में कोडुम्बलूर नामक गाँव है। उस गाँव में इडंगलि नायनार जीवन - यापन कर रहा था। वह चोलकुल का वंशज था। शिवभक्तों की सेवा करना ही उसका व्रत था। वह नीति के मार्ग पर शासन कार्य करता था।

उसके ज़माने में शिवभक्तों को नित्य अन्नदान करता शिवभक्त उस गाँव में रहता था। वह अपनी चराचर संपत्ति को बेच शिवभक्तों को भोजन की व्यवस्था करता था। इस प्रकार करने से कुछ समय पश्चात् वह गरीब बन गया। एक दिन ऐसा आया कि उसके घर में अन्न का एक दाना भी नहीं बचा। राजा इंडगलि नायनार के गोदामों में धान लबालब भरा हुआ था। उस शिवभक्त ने आधी रात को वहाँ से धान ले आने का प्रयत्न किया। वहाँ के रखवालों ने उसे पकड़कर, बंदी बनाकर इडंगलि

नायनार के आगे खड़ा किया। चोरी करने से दण्ड अवश्य मिलेगा - यह बात वह जानता था। राजा शिवभक्त था। उसे उन पर अपार प्रेम था। इस कारण वह सोचने लगा कि दण्ड अवश्य मधुर ही होगा।

राजा इडंगलि नायनार ने शिवभक्त को देखकर - 'तुमने धान की चोरी की है। यह सच है न?' प्रश्न किया। 'शिवभक्तों को भोजन देने की इच्छा से मैं ने चोरी की।' उस भक्त ने जवाब कहा। यह सुन राजा का हृदय पिघल गया। 'यही है न! सच्चा शिवभक्त। धान ही नहीं राज्य की सारी संपत्ति शिवभक्त उड़ा ले जाओ' इडंगलि नायनार ने उस भक्त से कहा। यही घोषणा राजा ने करवायी। शिवभक्तों ने राजा के गोदामों पर जाकर आवश्यक चीजों को प्राप्त किया। इस प्रकार शिवभक्तों की सेवा करते हुए, शिवभक्ति में जीवन बिताकर इडंगलि नायनार ने शिवलोक को प्राप्त किया।

53. सेरुत्तुणै नायनार

चोल मण्डल में तंजाऊर के वेलाल जाति में सेरुत्तुनै नायनार नामक शिवभक्त रहता था। वह तिरुवारूर जाकर वहाँ के वल्मीकनाथ की अर्चा कर आता था। एक दिन शिवालय जाकर नमस्कार कर लौट आते समय कलर सिंग नायनार की पटरानी ने पुष्प मण्डप के एक फूल को सूंघा था। यह देख क्रोध में आकर सेरुत्तनै नायनार ने अपनी तलवार से उसकी नाक काट दी थी। भगवान शिवजी की पूजा में आर्पित पुष्प के सूंघने को एक दोष मान सेरुत्तुनै नायनार ने रानी की नाक काटी। इस प्रकार सेरुत्तुनै नायनार प्रभु - सेवा में अपने को अर्पित कर शिव - सन्निधि को प्राप्त किया।

54. पुगल तुणै नायनार

सेरुसिल्लि पुत्तूर में वैदिक कुल में जन्मा पुगल तुणै नायनार नामक शिवभक्त रहता था। वह प्रतिदिन नियमपूर्वक शिव की पूजा करता था। उन दिनों में एक भयंकर अकाल पड़ा। पुगल तुणै नायनार भी अकाल का शिकार हुआ। कई दिनों तक भोजन नहीं मिलने के कारण के कारण वह सूखकर काँटा बन गया। फिर भी उसने शिवपूजा न छोड़ी।

पुगल तुणै नायनार एक दिन शिवजी का अभिषेक करते हुए भूख से कमजोर बनने के कारण घड़े को उठा न सका। हाथ से छूटकर घड़ा शिवलिंग पर गिर पड़ा। इधर पुगल तुणै नायनार मूर्छित हो पड़ा। तब शिवजी ने प्रकट होकर कहा - 'हे प्रिय भक्त! तेरी दरिद्रता को मिटाने के लिए मैं रोज एक स्वर्ण मुद्रा इस वेदी पर रखता हूँ। तू इसे ले लेना।' सचमुच उसे रोज एक स्वर्ण - मुद्रा मिली। पुगल तुणै नायनार ने खुशी से यथाविधि पूजते हुए शिव - सन्निधि प्राप्त की।

55. कोटूपुलि नायनार

तिरु नाट्टियत्तान कुडि नामक गाँव में वेलाल जाति में कोटूपुलि नायनार का जन्म हुआ। यह चोल सम्राट का सेनापति था। यह महान शिवभक्त था। कोटूपुलि नायनार राजा से जो वेतन पाता था, उसे वह शिवालय में शिवजी के नैवेद्य के लिए धान खरीदकर सुरक्षित रखता था।

एक बार कोटूपुलि नायनार राजा की आज्ञा के अनुसार शत्रुओं पर आक्रमण करने चला गया। 'मेरे आने तक शिव मंदिर में प्रभु को यथा विधि नैवेद्य समर्पित करना होगा।' उसने निश्चय किया। तुरन्त उसने धान खरीद कर पहाड़ों के समान जमा करके रखा। अपने रिश्तेदारों को बुलाकर - 'भगवान महादेव के नैवेद्य के लिए जुटाये धान को मन में भी

छूने की इच्छा मत करो। शिव की कसम ऐसा न करे।' इस तरह उन्हें बंधन में रख वह युद्ध के लिए चला गया।

उनके युद्ध में जाने के कुछ ही दिनों में भयंकर अकाल पड़ा। हम भूख से तड़पकर मरने की बजाय कोट्पुलि नायनार ने शिवजी के नैवेद्य के लिए जो धान छोड़ गये हैं, हम उसे आहार के रूप में लेंगे। जब हमारे पास धान आयेगा, तब हम लौटा देंगे', कहकर नायनार के बंधुओं ने धान ले लिया।

कोट्पुलि नायनार ने शत्रुओं को हराया। राजा प्रसन्न हो गया। उसने नायनार को अपार वस्तु सम्पदाएँ पुरस्कार में दी। उन्हें लेकर नायनार अपना गाँव तिरुनाट्टियत्तान कुडि को आया। गाँव में पैर रखते ही उन्हें अपने रिश्तेदारों का दुष्कर्म विदित हुआ। 'शिवजी की संपत्ति का हरण करनेवाले इन दुष्टों को मार दूँगा', कहकर क्रोध और आवेश से जल भुन गया। पर उसने अपने क्रोध को मन में ही दबा रखा। 'गाँव, के सभी रिश्तेदारों को नये वस्त्र और वस्तुओं को पुरस्कार के रूप में दूँगा। इसलिए सब को बुला लाओ', ऐसा कहकर अपने सैनिकों को भेजा। सेवकों ने जाकर सबको ले आये।

कोट्पुलि नायनार ने अपने सेवक कोट्पुलि को घर के आगे पहरे के लिए खड़ा किया। 'परम शिव के नैवेद्य के लिए रखे धान की गठरियों को आहार के रूप में लेकर शिवजी की कसम का तुम सबने उल्लंघन किया है। तुम्हें मारे बिना छोड़ूँगा नहीं', कहते हुए सभी रिश्तेदारों को अपनी तलवार के हवाले कर दिया।

भगवान महादेव जी अपने भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर प्रकट हुए। 'अपनी तलवार से तू ने अपने रिश्तेदारों का वध कर दिया। वे सब

पुण्यात्मा बन गए। वे पहले स्वर्ग में जाकर फिर मेरे लोक में आयेंगे। तू अभी हमारे साथ कैलाश आ जा', कहकर वे कोट्पुलि नायनार को कैलाश ले गये।

56. पूसलार नायनार

तोण्ड मण्डल का एक सुंदर गाँव है तिरुनिन्रऊर। उस गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में जन्मा था पूसलार। वह अपनी आय को शिवभक्तों के लिए खुशी से खर्च करता था। उसने शिवजी के लिए एक मंदिर का निमार्ण करना चाहा। पर इस कार्य के लिए उसके पास आवश्यक धन नहीं था। धन के लिए उसने बहुत कोशिश की। उसके सभी प्रयत्न व्यर्थ हुए। यह देख उसे बहुत दुःख हुआ। अंत में मन में ही शिव के लिए एक मंदिर के निर्माण का निर्णय लिया।

मंदिर के लिए आवश्यक पत्थर, रेत, चूना, मिट्टी आदि अपने मन में ही संचित कर लिया। कुशल शिल्पियों को जुटा लिया। एक शुभ मुहूर्त में शिलान्यास भी किया। रात दिन बिना आराम के मंदिर - निर्माण का कार्य चलने लगा। उसने कुछ ही दिनों में पूरा करना चाहा। उसने एक निश्चित तिथि का निर्णय किया। दीवारें, विमान, गोपुर, प्राकार, सरोवर, कुआँ आदि का क्रम से निर्माण करता आया। अपने मन में ही उसने एक - एक वस्तु को पूरा कर लिया। एक दिन एक सुंदर मंदिर बन गया। उसने कुंभाभिषेक का प्रबंध भी कर लिया। उसके लिए शुभ मुहूर्त का निश्चय भी कर लिया।

उन दिनों काँचीपुर में राजसिंह पल्लव सम्राट शिवजी के लिए एक बड़े मंदिर का निर्माण कर अपनी सारी संपदा को भगवान को समर्पित

कर दिया। जिस दिन पूसलार ने अपने हृदय में निर्मित मंदिर में कुंभाभिषेक का श्रीगणेश करना चाहा, सम्राट राजसिंह ने भी अपने द्वारा निर्मित मंदिर में भी कुंभाभिषेक करने का निश्चय किया।

कुंभाभिषेक के पहले दिवस के रात में शिवजी ने सम्राट के सपने में प्रकट होकर 'तिरुनिन्नऊर के पूसल नायनार ने बहुत सालों की मेहनत के बाद एक शिवमंदिर का निर्माण किया। हम कल वहाँ जा रहे हैं। तुम अपने मंदिर का अभिषेक किसी और दिन निश्चित कर लो', कहकर शिवजी अदृश्य हो गए।

शिवजी की बातों को सुन सम्राट चकित रह गया। 'महादेव के लिए अपूर्व मंदिर के पावन निर्माता का दर्शन कर नमस्कार करना चाहिए।' यह निर्णय कर सम्राट तिरुनिन्नऊर की ओर चल पड़े। सम्राट ने पूसलार को देखकर नमन किया। 'आपका बनाया मंदिर कहाँ है? उस मंदिर में भगवान को प्रतिष्ठित करने का दिन आज ही है। सपने में मुझे महादेव ने कहा है। इस कारण मैं तुम्हें देखने आया हूँ।' सम्राट ने सविस्तार बताया।

'भगवान ने मुझ पर अव्याज करुणा की है। मेरे पास किंचित भी संपत्ति नहीं है। इस कारण मैं ने दिल में ही मंदिर का निर्माण किया है।' पूसलार ने सविस्तार बताया। सम्राट यह सुन चकित रह गए। संतोषातिरेक से सम्राट ने कहा - 'इस भक्त की भक्ति बहुत अपूर्व है।'

पूसलार ने मन - मंदिर में महादेवजी को स्थापित किया। सारी पूजाएँ विधिवत् करता गया। अंत में प्रभु के चरण - कमलों में पहुँच गया।

57. मंगैयर करसि अम्मेयार

चोल नरेश की पुत्री मंगैयर करसि मदुरै के नेडुमार नायनार की पत्नी थी। केंदामर में विराजमान श्रीमहालक्ष्मी समान यह, पाण्ड्य वंश पर जो निन्दा लगी, उसे मुक्त करनेवाली महनीया है। तमिलनाडु पर जो संकट आये तिरुज्ञान संबंधर नायनार के अनुग्रह से, दूर कराकर जगत भर में शिव भक्ति के व्याप्त होने का कारण बनी। देश में शिव भक्ति दृढ़तापूर्वक व्याप्त होने, फलने - फूलने का श्रेय अम्मेयार को जाता है। शैवमत के प्रचार में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर मंगैयर करसि अम्मेयार शिवलोक पहुँच गई।

58. नेस नायनार

बल्लारी जिले के कंपिलि नामक गाँव में जुलाहे की जाति के मुखिया के रूप में ख्याति प्राप्त नेस नायनार रहा करता था। उसने अपने मन में शिवजी के चरण कमलों को, वाक् में पंचाक्षरी मंत्र को स्थान देकर जीवन बिताया। शिव भक्तों के लिए अपने शरीर को समर्पित कर जीवन को चरितार्थ बना लिया। चादर, कौपीण धारण करने वस्त्र बुनकर अपने घर आये शिव भक्तों में बाँटता था। शिव भक्तों को देखते ही उन्हें आदर देने उनके हाथ अपने आप उठ जाते थे। शैवधर्म का पालन करते हुए अंत में भगवान महादेव के तिरुचरणों की सन्निधि में चला गया।

59. कोच्चेंग चोल नायनार

कावेरी नदी जहाँ बहती है, उस चोल देश में चंद्र तीर्थ के समीप एक जंगल है। वहाँ एक करील वृक्ष के नीचे बहुत पहले एक बार शिवजी लिंग रूप में अवरित हुए थे। उस जंगल में एक हाथी था। पूर्व जन्म के

तपः फल के कारण उस हाथी को शिवलिंग को देख भक्ति - भाव उमड़ पड़ा। वह हाथी अपनी सूण्ड में नदी के जल को भरकर शिवलिंग का अभिषेक करता था। फूलों के गुच्छे से वह शिवजी को सजाता था। इस प्रकार क्रमशः हाथी शिवपूजा में लीन रहता था। हाथी द्वारा पूजने के कारण उस प्रदेश का नाम 'तिरुवानैक्का' पड़ा।

एक दिन एक मकड़ी वहाँ आयी। उसने शिवलिंग को देखा। पूर्व जन्म में वह शिव के गणों में से एक थी। इस कारणवश पूर्व जन्म की शिवभक्ति उसमें पुनः जाग गई। परम शिव पर धूप, धूल न पड़े इसलिए उसने अपने जाल से वितान को बनाया। अगले दिन यथा विधि हाथी शिवपूजा के लिए वहाँ आया। शिवलिंग पर फैले मकड़ी के जाले को देखा। 'इस अनुचित कार्य को किस ने किया?' कहता उसने जाले को हटाकर रोज की तरह अभिषेक कार्य को पूरा किया।

'हाथी के कारण ही उसका बनाया वितान बिखर गया' ऐसा मकड़ी ने सोचकर उसने पुनः वितान का निर्माण किया। हाथी अगले दिन फिर आया। उसने जाल के वितान को मिटा दिया। मकड़ी के क्रोध की कोई सीमा न रही। 'यह दुष्ट हाथी एक बार नहीं, दो बार मेरे बनाये वितान को नष्ट - भ्रष्ट कर शिवजी के प्रति घोर अपराध किया', अत्यंत कुपित होकर वह हाथी के सूण्ड के द्वारा भीतर जाकर उसे व्यथित करने लगी। हाथी इस व्यथा को सह नहीं सका। उसने अपनी सूण्ड को धरती पर दे मारा। इस पीड़ा से व्यथित हो वह मूर्छित हो गिर पड़ा और भीतर की मकड़ी भी मर गई। मृत हाथी ने कैलाश में शिवजी की सन्निधि में स्थान पाया और मकड़ी चोल सम्राट के रूप में जन्म लिया।

चोल वंशज कोच्चंग चोल ने सिंहासन पर बैठकर शासन की बागडोर हाथ में लिया। तिरुवानैक्का में वह पूर्वजन्म में मकडी के रूप में भगवान महादेव के अनुग्रह से प्रभु सेवा की बातें याद आईं। उसने तिरुवानैक्का में वेण्णावल् वृक्ष के साथ एक सुंदर मंदिर का निर्माण किया। अंत में तिल्लै नटराज के तिरुचरणों की सन्निधि प्राप्त की।

60. तिरु नीलकण्ठ यालूप्पाण नायनार

तिरुवेरुक्कत्तम् पुलियूर में पाणर वंश में तिरुनीलकंठ यालप्पाणार का जन्म हुआ। वह अपने कुलोचित वृत्ति के अनुसार याल् वाद्य को छोड़ संगीत सुनाता रहता था। इस प्रकार चोल देश के प्रख्यात् शिवालयों के दर्शन करता हुआ, वहाँ के प्रभुवर को याल् वाद्य के संगीत से स्तुति करता मदुरै पहुँच गया। भगवान महादेव खुश होकर उस दिन रात उसने गाँव के भक्तों के सपने में दिखाई देकर 'यालप्पाणर को तुम आमंत्रित कर मंदिर ले आओ' ऐसी आज्ञा दी। अगले दिन सभी भक्तों ने पाणर को साथ लेकर मंदिर में प्रवेश किया। यालप्पाणर ने भक्ति में परवश होकर संगीत का आलाप किया।

यों भगवान महादेव पर स्तुति गीतों की रचना करते हुए नायनार तिरुवारूर पहुँच गए। मंदिर के आगे खड़े होकर उसने प्रभु की स्तुति की। भगवान ने प्रसन्न होकर पाणर के प्रवेश के लिए उत्तर दिशा में एक द्वार की सृष्टि की। उस द्वार से यालूप्पाणर भीतर जाकर भगवान के आगे नत हुआ।

तिरुज्ञान संबंधर जहाँ - जहाँ जाता था, वहाँ जाकर उसके द्वारा गाये स्तोत्र पद्यों को याल् वाद्य से यह गाया करता था। तिरुनल्लूर में तिरुज्ञान संबंधर से मिलकर जीवन मरण के चक्र से मुक्त हुआ।

61. शड़ैय नायनार

शड़ैय नायनार ने तिरुनावलूर गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया था। वह बड़ा शिव भक्त था। उसने चारों वेदों का गहरा अध्ययन किया था। लोकों को पावन करनेवाले शैवमत का उद्धार कर, जन - जन को पुनीत बनानेवाले सुंदरमूर्ति का पिता था।

62. इसै ज्ञानियर

यह शिवभक्त शडै नायनार की धर्मपत्नी थी। सुंदरमूर्ति नायनार की माँ है। इसकी शिवभक्ति की तत्परता का वर्णन करना किसी के बस की बात नहीं है। बचपन से ही इसने सुंदरमूर्ति को शैवाचार पारायण के रूप में निखारा। यह संगीत में भी निष्णात हैं।

63. सुंदर मूर्ति नायनार

सुंदर मूर्ति नायनार तिरुवारूर में भक्तिपूर्वक त्यागराज स्वामी की सेवा में निमग्न रहता था। एक बार चेर सम्राट चेरमान पेरुमाल को देखने की अभिलाषा से त्यागराज स्वामी की अनुमति लेकर वहाँ से चल पड़े।

मार्ग के शिवमंदिरों के दर्शन करते हुए वे स्तोत्र पद्यों की रचना करते हुए चेर देश के तिरुप्पुक्कोलियूर पहुँच गये। उस गाँव के ब्राह्मण अग्रहार के माडा वीधि से गुजरते समय आमने - सामने के दो घरों से, एक घर में मंगलवाद्य और दूसरे घर से शोकालाप उन्हें सुनाई दे रहा था। सुंदर मूर्ति चकित रह गये। वहाँ के लोगों को देखकर पूछा - 'महाशय! एक ही समय दो घरों से भिन्न ध्वनियाँ आ रही हैं। इसका कारण क्या है?' वहाँ के ब्राह्मण सुंदर मूर्ति को देखकर कहा 'महात्मन्! दो बालक स्नान करने गये। उसमें एक बालक को मगर ने ग्रस लिया। दूसरा बालक

उससे बचकर आ गया। उसका आज उपनयन संस्कार हो रहा है। इस कारण उसके घर से मंगल वाद्य सुनाई पड़ रहे हैं। दूसरा, बच्चे को खोया घर है। वहाँ से इस कारण शोकालाप सुनाई दे रहा है।'

जिन्होंने अपने बच्चे को खोया वे कई दिनों से सुंदर मूर्ति नायनार के दर्शन के लिए लालायित थे। सुंदर मूर्ति को देखते ही वे अपना दुःख भूल गए और उन्हें सादर नमन किया। सुंदर मूर्ति ने उन्हें देखकर प्रश्न किया - 'अपने प्रियपुत्र को खोनेवाले तुम ही हो न?' दंपत्ति ने जवाब दिया - 'उस बालक के जन्मदाता हम ही हैं। हमारे बच्चे को मगर ने ग्रस लिया। आपके दर्शन के लिए कई दिनों से इंतजार कर रहे हैं। हमारी इच्छा आज पूरी हुई।'

सुंदर मूर्ति ने मगर के दह (कुण्ड) के पास जाकर एट्रान मरक्केन ..... से प्रारंभ होनेवाले ''तिरुप्पदिगम्'' (स्तोत्र दशक) का गान किया। उस दशक के चौथा पद्य पूरा होने से पहले ही यमराज मगर के मुँह से बालक को बाहर ले आया। बाहर आया बालक बीते दो वर्ष की आयु को भी पाकर स्वस्थ रूप में बाहर खड़ा हो गया।

सुंदर मूर्ति नायनार वहाँ से चेर देश की ओर निकल पड़े। सुंदर मूर्ति नायनार ने बालक को मगर के मुख से बचाया, वहाँ शिव भक्तों ने वहाँ के नरेश चेरमान पेरुमाल को खबर दी। वे भी सुंदर मूर्ति नायनार के दिव्य चरित को सुन ऐसा कहा 'महान शिव भक्त, महात्मा श्री सुंदर मूर्ति नायनार मेरे उद्धार के लिए आ रहे हैं। इस आनंद प्रद समाचार को नगाड़ा बजाकर गाँव भर सुना दो। साथ ही नगर को सजा दो।' उन्होंने सुंदर मूर्ति जी को सादर आमंत्रित करने के लिए अपने मंत्रियों को भेजा। उन्होंने उन्हें हाथी पर बिठाकर मंगल वाद्यों के बीच, सादर बुलाकर ले

आये। चेरमान सम्राट सुंदर मूर्ति नायनार की अगवानी करके विनम्र होकर नमन किया। सुंदर मूर्ति ने भी सम्राट को प्रति नमस्कार किया। दोनों खुशी की उमड़ती वेला में राज प्रासाद पहुँच गये। सम्राट ने उनका सम्मान पुष्प मालाओं से कर समुचित आसन पर बिठाया। नायनार ने प्रसन्नता से चेर राज्य में कुछ दिन बिताकर वहाँ के शिवमंदिरों का दर्शन किया।

एक दिन चेरमान पेरुमाल नहाने के लिए सुंदर मूर्ति को छोड़कर गये। सुंदर मूर्ति का कैलाश जाने का समय हो गया था। महादेव ने ब्रह्म आदि देवताओं को देखकर - 'तुम सफेद हाथी के साथ जाकर सुंदर मूर्ति जी को उस पर बिठाकर कैलाश ले आओ' ऐसी आज्ञा दी। वे भी उसी प्रकार तिरुवंजि कलत्तित ग्राम पहुँचकर सुंदर मूर्ति की प्रतीक्षा में खड़े हो गये। सुंदर मूर्ति तिरुप्पदिगम् गान पूरा करके मंदिर के बाहर आये। देवताओं ने उस शिव भक्त के आगे प्रणत होकर शिवाज्ञा को सुनाया। सुंदर मूर्ति भी खुशी से हाथी पर आरूढ़ होकर कैलाश पहुँच गये। लेकिन वे सम्राट चेरमान पेरुमाल नायनार को भूल न सके। वे उनकी स्मृति में खो गये।

सुंदर मूर्ति जी के कैलाश जाने का शुभ समाचार चेरमान महाराज को मिला। वे घोड़े पर बैठ घोड़े को तेज दौडाया। अपने मालिक की आज्ञा सुन, वह पवन वेग से दौड़कर सुंदर मूर्ति नायनार जिस हाथी पर बैठे थे, उसके आगे परिक्रमा कर रुक गया। चेरमान पेरुमाल को आकाश में जाते देख उसके सैनिक, अपने प्रभु को छोड़ न सकने के कारण प्राणार्पण किया। वे सूक्ष्म रूप धारण कर सुंदर मूर्ति जी के पास पहुँच कर, उन्हें नमन कर उनकी अनुमति लेकर कैलाश पहुँच गये। सुंदर

मूर्ति ने भगवान महादेव के निकट जाकर भक्ति पूर्वक साष्टांग नमस्कार किया। अपने मृदु मधुर स्वर से कहा - 'महात्मन्! चेरमान पेरुमाल नायनार द्वार के पास ही खड़े हैं।' परमशिवजी ने नंदीश्वर को बुलाकर आज्ञा दी 'तू जल्दी जा और चेरमान नायनार को सादर ले आ।' तुरन्त जाकर चेरमान नायनार को देखकर कहा - 'आपको भीतर आने की शिवजी ने अनुमति दी है।' चेरमान ने शिवजी के चरण - कमलों को भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। शिवजी मुस्कुराते हुए प्रश्न किया - 'हमने आपको बुलाया ही नहीं, आप स्वयं ही आ गये।' 'हे दया सागर! मैं ने सुंदर मूर्ति जी के तिरुचरणों की सेवा की है। आपके करुणा - प्रवाह मुझे यहाँ धकेलता आया। आप पर मैं ने 'तिरुकैलाय उला' नामक एक लघु काव्य की रचना की। उसे आप सुनियेगा', कहकर प्रार्थना करने पर शिवजी ने इसके लिए सम्मति देकर, उसे सुनकर वे फूले न समाये। 'तुम दोनों मिलकर शिवगणों का नेतृत्व की जिम्मेदारी वहन करो और कैलाश में रहो', यह कहकर त्रिनेत्र ने उन दोनों को शाश्वत कैलाश प्राप्ति का वर प्रदान किया।

समाप्त